

शिक्षा और मानवता

# शिक्षा और मानवता अनुसंधान के उपरांत प्रस्तुत शोध प्रबंध

|                       |                                                                                          |
|-----------------------|------------------------------------------------------------------------------------------|
| अनुसंधान विषय         | : शिक्षा और मानवता / शिक्षा में मानव मूल्य                                               |
| शोधार्थी का नाम       | : वी एन वी पद्मावती                                                                      |
| भाषा                  | : हिंदी                                                                                  |
| शोधार्थी का पता       | : प्लॉट नंबर : १ - १ - ३ / ५२ पी, गौदापुरी कॉलोनी, काप्रा,<br>हैदराबाद, तेलंगाना, ५०००६२ |
| शोधार्थी का फ़ोन नंबर | : 9951974900                                                                             |
| पंजीयन संख्या         | : HR/369/81                                                                              |
| शिक्षण संस्था         | : दिव्य प्रेरक कहानियां ह्यूमैनिटी रिसर्च सेंटर                                          |
| क्षेत्र               | : ठेकमा , आजमगढ़ जिला, उत्तर प्रदेश                                                      |

## शोध पर्यवेक्षक –

डॉ नयन प्रकाश, पाठशाला सहायक (पीएचडी मानद)



**दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केंद्र**

**Divya Prerak Kahaniyan Humanity Research Centre**

An ISO 2001 – 2018 Certified Research Institution

Regd. Under Indian Trust Act 1882, Government of India

पंजीकृत कार्यालय - ठेकमा, जिला - आजमगढ़, उत्तर प्रदेश (भारत)

## शोधार्थी घोषणा पत्र

मै वी. एन .वी. पद्मावती (शोधार्थी दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसन्धान केंद्र ) यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रस्तुत शोध प्रबंध "शिक्षा और मानवता" जो व्यावहारिक अनुसन्धान का मूल भाग है तथा अप्रकाशित है। इस शोध प्रबंध को डॉ अभिषेक कुमार के मार्गदर्शन में मैंने पूरा किया है। मै यह घोषणा करती हूँ कि इससे पहले किसी अन्य डिग्री डिप्लोमा के लिए इस उपयोग नहीं किया गया है। यह भी प्रमाणित करती हूँ मैंने अपना अनुसन्धान कार्य दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसन्धान केंद्र द्वारा प्रतिपादित सभी नियम निर्देशों के तहत पूर्ण किया है।

दिनांक : ३० - ०६ - २०२५

शोधार्थी का हस्ताक्षर

## पर्यवेक्षक घोषणा पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसन्धान केंद्र के अंतर्गत "शिक्षा और मानवता " विषय पर शोधार्थी वी .एन .वी. पद्मावती द्वारा किया गया प्रस्तुत अनुसन्धान मूल व अप्रकाशित भाग है। इनके द्वारा मेरे निर्देशन में यह शोध कार्य किया गया है एवं शोध प्रकाशन के लिए उपयुक्त है।

वर्तमान में यह व्यवहारिक अनुसंधान कार्य सामाजिक समरसता , आपसी एकता, प्रेम, सहयोग, परोपकार तथा नैतिकता, मानवता युक्त सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने में अति महत्वपूर्ण साबित होगा। इस तरह का अनुसन्धान कार्य करना अनुसंधान कर्ता की कार्य कुशलता व सच्ची मानवता के प्रति समर्पण को दर्शाता है। यह भी प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी ने अपना अनुसन्धान कार्य दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केंद्र द्वारा प्रतिपादित सभी नियम व निर्देशों के तहत पूर्ण किया है।

दिनांक : ३० - ०६ - २०२५

डॉ. नयन प्रकाश

पर्यवेक्षक का हस्ताक्षर

नाम : डॉ. नयन प्रकाश

पद का नाम : पाठशाला सहायक (Ph.D मानद)

पता : नल्लाकुंटा, हैदराबाद, तेलंगाना, इंडिया

## शोध विषय : शिक्षा और मानवता

- 🚩 शिक्षा क्या है ?
- 🚩 मानवता क्या है ?
- 🚩 शिक्षा में मानव मूल्य की आवश्यकता क्या है ?

### • शिक्षा क्या है ?

शिक्षा वह माध्यम है जिससे मनुष्य के अज्ञान रूपी अंधकार को दूर किया जा सकता है। शिक्षा वह प्रकाश है जो अँधेरे में मनुष्य का मार्गदर्शन करता है और सच्ची राह दिखाता है। शिक्षा बिना मनुष्य पशु कहलाता है। संस्कृत में कहा गया है कि विद्या हीना न शोभन्ते। शिक्षा द्वारा हमें नैतिक मूल्यों, समाज सेवा की भावना, सामाजिक न्याय, और समरसता के महत्त्व को समझने में मदद मिलती है। शिक्षा में ज्ञान, सही व्यवहार, तकनीकी कौशल, टीचिंग और विद्या प्राप्ति का सम्मिश्रण है। शिक्षा पढ़ने-लिखने की क्षमता सिखाती है। पढ़ना-लिखना शिक्षा का पहला सोपान है। शिक्षा मानव व्यवहार में परिवर्तन कर उसे उत्तम तथा आदर्शवान बनती है।

वास्तविकता यह है कि शिक्षा का कार्य क्षेत्र अनंत है और शिक्षा से सम्बन्धी क्षेत्रों की कमी नहीं है। इसके अंतर्गत वे सभी बातें आ जाती हैं जो व्यक्ति को प्रभावित करते हुए उसे इस योग्य बनती है कि वह अपने जीवन तथा समाज के लिए उचित कार्यों को उचित समय पर कर सके। ये कार्य देह, काल तथा परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं।

#### शिक्षा के क्षेत्र :

शिक्षा के ३ मुख्य प्रकार के क्षेत्र हैं। वे हैं :

1 औपचारिक

2 अनौपचारिक

३ गैर-औपचारिक

औपचारिक शिक्षा आम तौर पर शूल के परिसरों में होती है। जहाँ कोई व्यक्ति बुनियादी, शैक्षणिक या व्यापार कौशल सीख सकता है।

शिक्षाशास्त्र में ४ क्षेत्र हैं। शिक्षा, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र और दर्शनशास्त्र, शोक्षा अध्ययन का क्षेत्र है जो शिक्षण और सीखने के व्यावहारिक पहलुओं से सम्बंधित है। इसमें शैक्षिक नीतियों और प्रथाओं के विकास के साथ-साथ शिक्षण विधियों में अनुसंधान शामिल है।

- **शिक्षा के क्षेत्र के ३ अंग हैं :**

१. शिक्षक
२. बालक
३. पाठ्यक्रम

शिक्षा व्यवस्था को दो भागों में जैसे प्रारंभिक एवं उच्च शिक्षा में बांटा गया है और दोनों भागों में दी जाने वाली शिक्षा का पाठ्यक्रम भी उसमें सुनिश्चित किया गया है।

- **भारत में शिक्षा के प्रकार :**

१. प्राथमिक शिक्षा :
२. माध्यमिक शिक्षा
३. तृतीयक शिक्षा

भारत में शिक्षण के प्रकार प्राथमिक, माध्यमिक तथा तृतीयक होते हुए प्रौढ़ शिक्षा , सतत खुली शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से भी दी जाती है। जो लोग औपचारिक शिक्षा में ज्यादा व्यय नहीं कर सकते।

- **शिक्षा और मनोविज्ञान का सम्बन्ध:**

मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। शिक्षा को शिक्षण कार्य के लिए मनोविज्ञान की स्वीकृति प्राप्त करनी पड़ती है। शैक्षिक मनोविज्ञान की सहायता से शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनता है। यह शिक्षक को अपने शिक्षण विधियों को छात्र की आवश्यकताओं के अनुसार या स्वभावों के अनुकूल शिक्षा देने में सहायक होती है। शिक्षक व्यक्तिगत मतभेदों द्वारा उठाये गए मुद्दों से अवगत होने और प्रत्येक छात्र के साथ सामान व्यवहार करने में सक्षम बनता है। शिक्षा मनोविज्ञान का सम्बन्ध सीखने एवं सीखने की विधियों अर्थात् पढ़ाने से है। आधुनिक शिक्षा का आधार मनोविज्ञान है।

- **शिक्षा के पांच मनोवैज्ञानिक आधार :**

शैक्षिक मनोविज्ञान कार्यक्रम के कई सिद्धांत हैं किन्तु शिक्षण कार्य के लिए ५ आधारों को चयन किया गया है। वे हैं व्यवहारवाद , सज्ञानात्मकवाद , रचनानुवाद , अनुभववाद और सामाजिक प्रासंगिक शिक्षण सिद्धांत। शैक्षिक मनोविज्ञान के सिद्धांतकरता है। १९०० ई में इसकी उत्पत्ति हुई। शिक्षा समाज को ज्ञानवान, सशक्त ,समृद्ध,और सुखी बनती है। शिक्षा समाज में गरीबी, अशिक्षा, अज्ञानता, अंधविश्वास और अन्य सामाजिक बुराईयों को दूर करने में मदद करती है। शिक्षा के बिना मानव जीवन अधूरा है। शिक्षा करियर क नए द्वार खोलती है। शिक्षा रचनात्मकता में वृद्धि करती है। शिक्षा वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देती है। शिक्षा बिना किसी भेदभाव के हर व्यक्ति को जीवन में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करती है। शिक्षा किसी व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता निर्धारित करती है। शिक्षा सीखने के सभी अनुभवों का विकास करती है।होरेसन मान को शिक्षा का जनक माना जाता है। लार्ड मेकाले को भारत में आधुनिक शिक्षा का जन्मदाता माना जाता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली शिक्षा बाहरी दक्षता से सम्बंधित है , जिसका अर्थ है की यह छात्रों को कार्यबल और समाज में सफलता के लिए तैयार करने पर केंद्रित है। संविधान के ८६ वे अधिनियम, २००२ ने भारत के संविधान में अन्तः स्थापित अनुच्छेद २१, ऐसे ढंग से जैसाकि राज्य कानून द्वारा निर्धारित करता है , मौलिक अधिकार के रूप में ६ से १४ वर्ष के आयु के

समूह छात्रों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का प्राविधान करता है। सुकरात शिक्षण के जनक और मार्गदर्शी हैं। भारत में अंग्रेजी शिक्षा लाने का श्रेय लार्ड विलियम बेंटिक है।

## ■ शिक्षा और समाजशास्त्र

समाजशास्त्र में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण शोध विषयों में से एक है। विभिन्न दृष्टिकोणों के समाजशास्त्रियों ने शिक्षा पर व्यापक रूप से चर्चा की है और प्रत्येक समाज में शिक्षा के कार्य, संरचना, संघठन और अर्थ पर अद्वितीय विचार करता है। शैक्षिक समाजशास्त्र उन सामाजिक कारकों का अध्ययन है जो समाज के भीतर और समाज के सभी शैक्षिक संरचनाओं और प्रक्रियों को प्रभावित करते हैं। समाजशास्त्र और शिक्षा के दो विषयों के भीतर एक विशिष्ट उपक्षेत्र के रूप में, शैक्षिक समाजशास्त्र को शिक्षा के समाजशास्त्र या शिक्षा कि सामाजिक नींव के रूप में भी जाना जाता है। एक शिक्षक ही अपने विद्यार्थी का जीवन गढ़ता है और शिक्षक ही समाज कि आधारशिला है। एक शिक्षक अपने जीवन के अंत तक मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता है और समाज को राह दिखता रहता है, तभी शिक्षक को समाज में उच्च दर्जा दिया जाता है।

शिक्षा और समाज दोनों परस्पर सम्बंधित या अन्योन्याश्रित हैं क्योंकि दोनों एक दूसरे पर निर्भर हैं। एक दूसरे को प्रभावित करें अर्थात पूरक। शिक्षा के बिना हम आदर्शों का निर्माण ही कर सकते। समाज और समाज के बिना हम शिक्षा व्यवस्था को व्यवस्थित ढंग से कैसे व्यवस्थित कर सकते हैं अर्थात दोनों को समझने की आवश्यकता है।

## ■ शिक्षा और दर्शनशास्त्र में सम्बन्ध :

शिक्षा हमें ज्ञान और समझ की दिशा में गाइड करती हैं, जबकि दर्शन शास्त्र हमें जीवन के मूल्यों, धर्म, और दार्शनिक सिद्धांतों की समझ प्रदान करता है। शिक्षा हमें नैतिकता और सही व्यवहार के लिए तैयार करती हैं, जबकि दर्शन शास्त्र हमें इन मूल्यों के आधार पर अपने जीवन को जीने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है। दर्शन और शिक्षा आपस में घनिष्ट रूप से जुड़े हुए हैं। शिक्षा कुछ दार्शनिक सिद्धांतों और सिद्धांतों पर आधारित है जो की इसकी प्रथाओं और लक्ष्यों का मार्गदर्शन करते हैं। शिक्षा का दर्शन शैक्षिक प्रणालियों के लिए एक सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है और उनके दृष्टिकोण, मिशन और कार्यक्रमों को आकार देने में मदद करता है।

सामान्य ज्ञान प्रदान करने या प्राप्त करने, तर्क और निर्णय की शक्ति विकसित करने और आम तौर पर परिपक्व जीवन के लिए स्वयं कप या दुसरे को बौद्धिक रूप से तय्यार करने का कार्य या प्रक्रिया। मूल रूप से दर्शन के जनक महर्षि व्यास माने जाते हैं। शिक्षा के सात दर्शनों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है : अनिवार्यवाद, प्रगतिवाद, बारहमासीवाद, अस्तित्ववाद, व्यहारवाद, भाषाई दर्शन और रचनावाद। सबसे बुद्धिमान दार्शनिक पश्चिमी देशों से सुकरात माने जाते हैं। उन्हें इतिहास के सबसे बुद्धिमान व्यक्तियों में से एक माना जाता है। बुनियादी शिक्षा या चीजों के बारे में सिद्धांतों का अध्ययन या निर्माण ही दर्शन शास्त्र कहा जाता है। मानवता क्या है ?

मानवता मानवीय स्थिति से प्राप्त परोपकारी नैतिकता से जुड़ा एक गुण है। यह मानव मात्र के प्रति मानवीय प्रेम और करुणा का प्रतीक है।

मानवता में निष्पक्षता होती है जो बिना स्वार्थ के की जाती है। सुख, समृद्धि एवं शांति से परिपूर्ण जीवन के लिए सच्चरित्र तथा सदाचारी होना आवश्यक है। उत्कृष्ट विचारों से ये सम्बंधित तथा संभव है। कबीर के अनुसार

*दुर्लभ मानुष जनम है, देह न बारम्बार।*

*तरुवर जो पत्ता झड़ै, बहुरि न लागै डार।।*

अर्थात् जब हमें मनुष्य का जन्म मिला है तो हमें उसका सही उपयोग करना है। यह बार-बार न मिलेगा, जब मिला है तो उसे अच्छाई के लिए उपयोग कर जीवन सार्थक बनायें। मानवता का अर्थ एहि है की दूसरों के प्रति दया, करुणा, सहानुभूति, मानवीय दृष्टिकोण होना आवश्यक है। होना जीवन तो हर कोई जी लेता है। समयानुसार दूसरों के कष्ट या दुःख दूर करने के लिए जो तत्पर हो वही सच्चा मानव है। उसीमें मानवता दृग्गोचर होती है। नाबूझ्य होना जीवन होने कर्तव्यों का पालन करते हुए सत्यनिष्ठा पर रहकर ईमानदारी से करे, सभी प्राणियों से निष्पक्ष रूप से व्यवहार करें और सब के प्रति दया का भाव रखें।

इस अनंत विश्व पटल पर ८४,००,००० प्राणियों में मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसमें भाव, मनोविचार व्यक्त करने की शक्ति है और वह संवेदनशील भी है अर्थात् दूसरों के दुःख समझ सकता है और निर्णय लेनेपर उनके दुःख दूर करने की क्षमता भी रखता है। मानवता व्यक्त करने का यह एक मुख्य माध्यम है। हम मनुष्य हैं। मनुष्य को होमोसेपियंस भी कहा जाता है। एक परंपरा, संस्कृति, धारण कर सीढ़ी चलनेवाली प्रजाति है जो जमीन पर रहती है लगभग ३१५,००० साल पहले अफ्रीका में विकसित हुई थी। पेट्रार्क ने ही सर्वप्रथम अपने साहित्य के माध्यम से मानवतावादी विचारधार को प्रोत्साहित किया इसलिए इन्हें मानवतावाद का पिता माना जाता है।

## ● मानवता क्या है ?

मानवता का तात्पर्य है जब भी और जहाँ भी संभव हो दूरों की मदद या देखभाल करने से संभव होता है। मानवता का लक्षण या लक्ष्य तभी व्यक्त होता है जब व्यक्ति स्वार्थ को भूलकर दूसरों की मदद के लिए आगे बढ़ता है जब उन्हें हमारी आवश्यकता होती है। मनुष्य शब्द मन धातु से उत्पन्न हुआ जो विचारशील, बुद्धिमान, प्रज्ञावान, मनीषी, आदिपुरुष अर्थों में किया जाता है।

मनुष्य का विकास पूर्वी अफ्रीका में २५ लाख वर्ष पहले ऑस्ट्रेलोपैथिकस नमक वानरों के एक जींस से हुआ जिसका अर्थ दक्षिणी वानर है। एडम मानव जाती के पिता माने जाते हैं। दुनिया की पहली जाती निषाद मानी जाती है। जिनका वर्णन हर युग में मिलता है। मानवता में सज्जनता निहित है, जो सदाचार का पहला लक्षण है।

मनुष्य की शाश्वत पूँजी यही है। मनुष्य भौतिकता के वशीभूत होकर जीवन की जरूरतों को अनावश्यक रूप से बढ़ता रहता है। जिसके लिए सभी से भलाई-बुराई लेने के लिए तैयार रहता है। मानवता के प्रति समर्पित होकर नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिए ईमानदारी से प्रतिबद्ध हो, मानव जीवन की सार्थकता इसीमें निहित है। जीवन में नैतिकता की उपेक्षा करने से आत्मबल कमजोर हो जाता है। मानव जीवन में जितने आदर्श उपस्थित करनेवाले सद्गुण हैं वे सभी नैतिकता के अंतर्गत आते हैं।

मानवता मानव जाति और मानव गुणों का प्रतिनिधित्व करती है। यह दूसरों के प्रति सहानुभूति, दया, करुणा और सम्मान का भाव है, जो हमें इंसान बनाता है। मानवता एक ऐसी भावना है जो हमें दूसरों की मदद करने और उनकी भलाई के लिए काम करने के लिए प्रेरित करती है।



- **मानवता के विभिन्न पहलू:**

**मानव जाति:** मानवता सभी मनुष्यों का एक समूह है, जो पृथ्वी पर रहते हैं।

**मानव गुण:** मानवता में करुणा, सहानुभूति, प्रेम, और दूसरों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करने की क्षमता शामिल है।

**नैतिकता:** मानवता नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों पर आधारित है, जैसे कि दूसरों के प्रति न्याय, सच्चाई और ईमानदारी।

**सद्भाव:** मानवता दूसरों के प्रति सद्भाव और मैत्रीपूर्ण व्यवहार का भाव है।

**परोपकार:** मानवता दूसरों की भलाई के लिए काम करने और उनकी मदद करने की भावना है।

- **मानवता का महत्व:**

**सामाजिक संबंध:** मानवता सामाजिक संबंध और समुदाय को मजबूत करती है।

**मानवाधिकार:** मानवता सभी मनुष्यों के मानवाधिकारों की रक्षा करती है।

**शांति:** मानवता शांति और सद्भाव को बढ़ावा देती है।

**विकास:** मानवता मानव विकास और प्रगति को बढ़ावा देती है।

**उदाहरण:** किसी गरीब या जरूरतमंद व्यक्ति की मदद करना।

किसी बीमार या घायल व्यक्ति को सहारा देना।

किसी के प्रति दया और करुणा दिखाना।

किसी के साथ सम्मानपूर्वक और प्रेम से व्यवहार करना।

दूसरों के प्रति न्याय और सच्चाई से व्यवहार करना।

मानवता को बनाए रखने और बढ़ावा देने के लिए, हमें दूसरों के प्रति सहानुभूति, दया, और करुणा का भाव रखना चाहिए। हमें दूसरों की मदद करने और उनकी भलाई के लिए काम करना चाहिए। हमें नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों पर आधारित जीवन जीना चाहिए, और दूसरों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

शीर्ष पाँच मूल्य इस बारे में हैं कि हम अपने जीवन में लोगों के साथ कैसे संबंध रखते हैं - परिवार, देखभाल, सम्मान, दोस्ती और विश्वास। इससे पता चलता है कि अधिकांश लोगों के लिए पारस्परिक सुरक्षा एक बुनियादी प्राथमिकता है।

मानवता का आधार है मन, एक साफ मन। जिसका हृदय साफ है, लोगों के लिए करुणा है दया है वहीं एक सही मानव है। और उसके अंदर पाए जाने वाले ये गुण मानवता का आधार है।

भारतीय संविधान की उद्देशिका का मूल भाव मानवता है। एक ऐसी मानवता जिसमें मनुष्य ही नहीं संपूर्ण प्राणी जगत के कल्याण की भावना व्याप्त है।

मूल्य" शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं, लेकिन मुख्य रूप से यह किसी वस्तु, सेवा या विचार का मूल्य या लागत को दर्शाता है। यह किसी चीज का महत्व, उपयोगिता, या नैतिक और सांस्कृतिक महत्व भी हो सकता है।

- **व्यावहारिक अर्थ:**

**कीमत:** किसी वस्तु या सेवा को खरीदने के लिए चुकाया जाने वाला धन।

**महत्व:** किसी चीज की उपयोगिता या महत्व।

**मान्यता:** किसी चीज के प्रति एक व्यक्ति या समूह की धारणा।

- **मानवीय मूल्य:**

**नैतिक मूल्य:** सत्य, ईमानदारी, दया, न्याय, और प्रेम जैसे मूल्य।

**सांस्कृतिक मूल्य:** परिवार, समुदाय, और परंपरा के प्रति मूल्य।

- **शिक्षा और मानवता / शिक्षा में मानव मूल्य या नैतिक मूल्य वैदिक काल में :**

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों को अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया गया था। वेदों एवं उपनिषदों की ऋचाओं में अहिंसा, त्याग, परोपकार, धैर्य, क्षमा, न्याय, सहिष्णुता, समरसता आदि मानवीय मूल्यों की शिक्षा प्रदान की गयी थी।

" नैतिक शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से लोग दूसरों में नैतिक मूल्यों का संचार करते हैं। यह कार्य घर, विद्यालय, मन्दिर, जेल, मंच या किसी सामाजिक स्थान (जैसे- पंचायत भवन) में किया जा सकता है। " नैतिकता समाज का वह तत्व है, जिसकी उपस्थिति में सभ्य समाज का निर्माण किया जा सकता है।

वेदाङ्ग हिन्दू धर्म ग्रन्थ हैं। वेद के अर्थ ज्ञान में सहायक शास्त्र वेदाङ्ग कहा जाता है। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द और निरुक्त - ये छः वेदाङ्ग हैं। छन्द को वेदों का पाद, कल्प को हाथ, ज्योतिष को नेत्र, निरुक्त को कान, शिक्षा को नाक, व्याकरण को मुख कहा गया है। पुरुषार्थ के तीन लक्ष्य हैं जिनके माध्यम से व्यक्ति मोक्ष की प्राप्ति की ओर बढ़ सकता है। वैदिक शिक्षा के अन्य महत्वपूर्ण लक्ष्य थे- चरित्र तथा व्यक्तित्व का विकास, इंद्रियों का उच्चाटन, संस्कृति का संरक्षण, चरित्र का निर्माण तथा शारीरिक सक्षमता। नैतिक मूल्यों में गिरावट को देखते हुए आज वैदिक शिक्षा को औपचारिक रूप से शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग बनाए जाने की जरूरत है।

व्यक्तियों के समूह को ही समाज कहते हैं। जैसे व्यक्ति होंगे वैसा ही समाज बनेगा। किसी देश का उत्थान या पतन इस बात पर निर्भर करता है कि इसके नागरिक किस स्तर के हैं और यह स्तर बहुत करके वहाँ की शिक्षा-पद्धति पर निर्भर रहता है। व्यक्ति के निर्माण और समाज के उत्थान में शिक्षा का अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान होता है। प्राचीन काल की भारतीय गरिमा ऋषियों द्वारा संचालित गुरुकुल पद्धति के कारण ही ऊँची उठ सकी थी।

पिछले दिनों भी जिन देशों ने अपना भला-बुरा निर्माण किया है, उसमें शिक्षा को ही प्रधान साधन बनाया है। जर्मनी इटली का नाजीवाद, रूस और चीन का साम्यवाद, जापान का उद्योगवाद युगोस्लाविया,

स्विटजरलैंड, क्यूबा आदि ने अपना विशेष निर्माण इसी शताब्दी में किया है। यह सब वहाँ की शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने से ही संभव हुआ। व्यक्ति का बौद्धिक और चारित्रिक निर्माण बहुत सीमा तक उपलब्ध शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करता है।

वर्तमान विश्व के विकास के प्रमुख आधार विज्ञान और प्रौद्योगिकी है। वर्तमान विश्व में न केवल ज्ञान का विस्फोट, जनसंख्या का विस्फोट, गतिपूर्ण सामाजिक परिवर्तन आदि हो रहे हैं, अपितु हमारे परिवार तथा समाज का ढांचा भी उसी गति से परिवर्तित हो रहा है। प्रचार विचार-विमर्श तथा विचार-विनियम के नवीन प्रभावी साधन विकसित हो रहे हैं। इन सभी का हमारे नैतिक मूल्यों पर प्रभाव पड़ा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि विज्ञान-आधारित विकास को जीवन-शक्ति हमारे नैतिक एवं आध्यात्मिक आधारों से प्राप्त है।

नैतिक शिक्षा को सामान्यतः व्यापक रूप में ग्रहण किया जाता है। इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार की क्रियाएं समाहित हैं।

1. शारीरिक स्वास्थ्य का प्रशिक्षण
2. मानसिक स्वास्थ्य
3. शिष्टाचार या शुद्ध आचार-विचार
4. उपयुक्त सामाजिक आचरण
5. धार्मिक प्रशिक्षण के नागरिक अधिकार एवं कर्तव्य आदि।

कुछ विचारकों का मत है कि :-

नैतिक शिक्षा को धार्मिक शिक्षा से पृथक नहीं किया जा सकता है।

नैतिक शिक्षा को चारित्रिक विकास के रूप में देखते हैं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि नैतिक शिक्षा उपयुक्त आचरण तथा आदतों के विकास से संबंधित है।

बालक का नैतिक विकास सामाजिक जीवन की स्वाभाविक देन है अतः नैतिक विकास सामाजिक विकास से अलग कोई वस्तु नहीं है।

कुछ विचारकों ने नैतिक प्रशिक्षण को कुछ विशिष्ट सद्गुणों(Virtues) तथा आदतों का विकास माना है। परंतु इससे सिद्धान्त-शिक्षण(Indoctrination) के विकास की संभावना है।

कुछ विचारकों का मत है कि नैतिकता को ग्रहण किया जाता है न की पढ़ाया जाता है। (Morality caught rather than taught) अतः नैतिक शिक्षा उपयुक्त भावनाओं तथा संवेगों के विकास से संबंधित है। इसमें भावात्मक पक्ष पर बल दिया जाता है। अर्थात् इसमें संज्ञानात्मक(Cognitive) पक्ष को स्थान नहीं दिया जाता है। वरन भावनात्मक विकास को स्थान दिया जाता है।

नैतिक शिक्षा द्वारा बच्चों को उन विभिन्न परिस्थितियों में रखा जाए जिनमें वे अपनी संज्ञानात्मक क्षमता के आधार उपयुक्त नैतिक निर्णय बनाने में समर्थ हो सके। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि बालकों के समक्ष विभिन्न परिस्थितियाँ में रखा जाए जिनमें वे अपनी संज्ञानात्मक क्षमता के आधार उपयुक्त नैतिक

निर्णय बनाने में समर्थ हो सके। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि बालकों के समक्ष विभिन्न परिस्थितियाँ प्रस्तुत की जायें जिनमें वे अपने स्वयं के नैतिक निर्णय बना सके अर्थात् वे स्वयं अपने मूल्यों का निर्माण कर सके। नैतिक शिक्षा की आवश्यकता

चरित्र का निर्माण – मनुष्य के भाग्य का निर्माण उसका चरित्र करता है। चरित्र ही उसके जीवन में उत्थान और पतन, सफलता और विफलता का सूचक है। अतः बालक को सफल व्यक्ति, उत्तम नागरिक और समाज का उपयोगी सदस्य बनाना चाहते हैं तो उसके चरित्र का निर्माण किया जाना परम आवश्यक है। यह तभी सम्भव है, जब उसके लिए धार्मिक और नैतिक शिक्षा की व्यवस्था की जाये।

उचित मूल्यों का समावेश – पाश्चात्य देशों के समाजों में धार्मिक और नैतिक शिक्षा के अभाव के कारण अनेक गंभीर दोष उत्पन्न हो गए हैं। अतः वहाँ के अनेक महान विचारकों की यह धारणा बन गई है कि धार्मिक और नैतिक शिक्षा के द्वारा छात्रों में उचित मूल्यों का समावेश किया जाना अनिवार्य है। क्योंकि भारतीय समाज में भी पाश्चात्य समाजों के कतिपय दोष दृष्टिगोचर होने लगे हैं, अतः उनका उन्मूलन करने के लिए पाश्चात्य विचारकों की धारणा के अनुसार यहाँ भी कार्य किया जाना आवश्यक है।

अनंत मूल्यों की प्राप्ति – सत्य, शिव और सुंदर अनंत मूल्य समझे जाते हैं। ये सबसे अधिक मूल्यवान् वस्तुएँ हैं जो स्वतः अपना अस्तित्व रखती हैं और हमारे आदर एवं निष्ठा की पात्र हैं। हम केवल धर्म और नैतिकता के माध्यम से ही इन मूल्यों को खोजकर और प्राप्त करके अपने जीवन को पूर्ण बना सकते हैं।

#### ■ अच्छे गुणों व आदतों का निर्माण :

अर्नेस्ट चेव के अनुसार बालकों को धार्मिक और नैतिक शिक्षा दी जानी इसलिए आवश्यक है, क्योंकि वह उनमें अनेक अच्छे गुणों और आदतों का निर्माण करती है, यथा-उत्तरदायित्व की भावना, सत्य की खोज, उत्तम आदर्शों की प्राप्ति, जीवन-दर्शन का निर्माण, आध्यात्मिक मूल्यों की अभिव्यक्ति इत्यादि।

ऐतिहासिक तथ्य की अवहेलना:

मुहीउद्दीन के अनुसार, भारतीय सन 1950 से धार्मिक और नैतिक शिक्षा की माँग करते चले आ रहे हैं। उनकी माँग का आधार यह ऐतिहासिक तथ्य है कि धर्म और नैतिकता का उनके जीवन में अति महत्वपूर्ण स्थान रहा है। उनकी माँग को पूरा न करना, इस ऐतिहासिक तथ्य की अवहेलना करना है। विश्वविद्यालय शिक्षा-आयोग के प्रतिवेदन में अंकित ये शब्द अक्षरशः सत्य हैं, “यदि हम अपनी शिक्षा- संस्थाओं से आध्यात्मिक प्रशिक्षण को निकाल देंगे, तो हम अपने सम्पूर्ण ऐतिहासिक विकास के विरुद्ध कार्य करेंगे।

धार्मिक और नैतिक शिक्षा की विषय-सामग्री :

भारत में अनेक धर्मों और सम्प्रदायों के व्यक्ति निवास करते हैं। संविधान की 19वीं धारा उनको अपने धर्मों का अनुसरण करने की पूर्ण स्वतंत्रता देती है। गांधीजी के अनुसार “मेरे लिए नैतिकता, सदाचार और धर्म –पर्यायवाची शब्द है। नैतिकता के आधारभूत सिद्धांत सब धर्मों में समान हैं। इसे बच्चों को निश्चित रूप से पढ़ाया जाना चाहिए और इसको पर्याप्त धार्मिक शिक्षा समझा जाना चाहिए। अष्टादश (अठारह) पुराणों में नैतिक मूल्यों की शिक्षा से जुड़े अनेक श्लोक मिलते हैं, जो शिक्षा और जीवन में अत्यंत उपयोगी हैं।

ये श्लोक धर्म, सत्य, कर्तव्य, परोपकार, और जीवन के आदर्शों को सिखाते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख श्लोक और उनके भावार्थ दिए जा रहे हैं जो शिक्षा में नैतिक मूल्यों के लिए अत्यधिक उपयोगी हो सकते हैं:

### 1. सत्य और धर्म का महत्त्व (विष्णु पुराण, 3.12.23)

सत्यमेव परं धर्मं सत्ये धर्मः प्रतिष्ठितः।

सत्यं हि परमो लोकः सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम्॥

**भावार्थ:** सत्य ही सर्वोच्च धर्म है, और धर्म सत्य में ही स्थापित है। सत्य ही परम लोक है और सत्य में ही सब कुछ स्थापित है। यह श्लोक सिखाता है कि सत्य जीवन का सबसे महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य है। शिक्षा में सत्य का पालन करना अत्यंत आवश्यक है। यह श्लोक विद्यार्थियों को सिखाता है कि किसी भी परिस्थिति में सत्य का साथ नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि सत्य से ही धर्म और जीवन की प्रगति होती है।

### 2. नैतिकता और परोपकार (गरुड़ पुराण, 1.72.5)

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।

पुण्यं पापं च लिंगानि शरीरं तेन बाध्यते॥

**भावार्थ:** दूसरों की सहायता करना पुण्य है और दूसरों को कष्ट देना पाप है। पुण्य और पाप के कार्य शरीर पर प्रभाव डालते हैं। यह श्लोक परोपकार और दूसरों की सहायता करने की महत्ता को दर्शाता है। शिक्षा में परोपकार का आदान-प्रदान और दूसरों की मदद करना आवश्यक है, जिससे समाज में सौहार्द और सद्भाव बना रहता है। विद्यार्थियों को यह सिखाया जा सकता है कि वे दूसरों की मदद करें और किसी को भी पीड़ा न पहुँचाएँ।

### 3. कर्तव्य का पालन (पद्म पुराण, उत्तर खंड, 50.3)

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि॥

**भावार्थ:** तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने पर है, फलों पर नहीं। इसलिए कभी भी कर्म के फल की चिंता मत करो और न ही कर्म न करने की ओर आकर्षित हो। यह श्लोक शिक्षा के क्षेत्र में कर्तव्यपालन की महत्ता को दर्शाता है। विद्यार्थियों को अपने अध्ययन, परिश्रम और प्रयास में तत्पर रहना चाहिए, परिणाम की चिंता किए बिना। यह श्लोक उन्हें सिखाता है कि कर्म करना ही जीवन का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए, और परिणाम की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

### 4. ज्ञान और विनम्रता (स्कंद पुराण, महेश्वर खंड, 3.21)

विद्या विनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।

शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः॥

**भावार्थ:** जो विद्या और विनय से युक्त हैं, वे पंडित (ज्ञानी) सभी को समान दृष्टि से देखते हैं, चाहे वह ब्राह्मण हो, गाय हो, हाथी हो, कुत्ता हो या कोई चांडाल हो। इस श्लोक का मुख्य संदेश विनम्रता और

समदृष्टि है। शिक्षा में ज्ञान के साथ-साथ विनम्रता का होना अत्यंत आवश्यक है। यह विद्यार्थियों को सिखाता है कि वे अपने ज्ञान का उपयोग अहंकार के लिए नहीं, बल्कि दूसरों के प्रति समभाव और आदर के लिए करें।

#### 5. अहिंसा का महत्त्व (शिव पुराण, 5.41.8)

अहिंसा परमं धर्मः सर्वप्राणभृतां समः।

अहिंसया धर्मः सिध्यति तस्मादहिंसां न हिंसयेत्॥

**भावार्थ:** अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है, और सभी जीवधारियों के लिए समान है। अहिंसा के द्वारा ही धर्म की प्राप्ति होती है, इसलिए किसी को भी हिंसा नहीं करनी चाहिए। यह श्लोक अहिंसा के नैतिक मूल्य पर जोर देता है। शिक्षा में अहिंसा का पालन आवश्यक है, जहाँ विद्यार्थियों को सिखाया जाता है कि वे न केवल शारीरिक रूप से, बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी किसी को चोट न पहुँचाएँ। यह श्लोक जीवन में संयम और दूसरों के प्रति करुणा का भाव विकसित करने में सहायक है।

#### 6. सदाचार का पालन (नारद पुराण, पूर्व खंड, 12.67)

सदाचारः परो धर्मः सर्वेषां सत्यसंश्रयः।

सदाचारविहीनस्य शीलं न व्यभिचारयेत्॥

**भावार्थ:** सदाचार सबसे बड़ा धर्म है और यह सत्य पर आधारित होता है। जो व्यक्ति सदाचार से रहित होता है, उसका कोई शील (चरित्र) नहीं होता। यह श्लोक विद्यार्थियों को सदाचार और नैतिकता के पालन की शिक्षा देता है। शिक्षा में अच्छे व्यवहार, अनुशासन और नैतिक आचरण का होना अति आवश्यक है। सदाचार के बिना व्यक्ति का जीवन दिशाहीन हो सकता है, इसलिए विद्यार्थियों को सदैव सदाचारी बनने का प्रयास करना चाहिए।

#### 7. संतोष का महत्त्व (भागवत पुराण, 7.15.12)

संतोषः परमं सुखं नास्ति संतोषात् परं धनम्।

तस्मात् सर्वेषु कालेषु संतोषं समुपाश्रयेत्॥

**भावार्थ:** संतोष सबसे बड़ा सुख है, और संतोष से बड़ा कोई धन नहीं है। इसलिए व्यक्ति को हर समय संतोष का आश्रय लेना चाहिए। यह श्लोक शिक्षा में संतोष का महत्त्व सिखाता है। विद्यार्थियों को यह समझना चाहिए कि जीवन में संतोष और आत्म-संतुष्टि ही असली सुख हैं। चाहे कितनी भी सफलताएँ क्यों न मिलें, संतोष का भाव बनाए रखना आवश्यक है, ताकि जीवन में संतुलन और शांति बनी रहे।

### 8. क्षमा का गुण (वामन पुराण, 5.32.6)

क्षमा बलमशक्तानां शक्तानां भूषणं क्षमा।

क्षमा वशीकृते लोके क्षमया किम् न साध्यते॥

**भावार्थ:** क्षमा निर्बलों का बल है और शक्तिशाली व्यक्तियों का आभूषण है। इस संसार में क्षमा के द्वारा कौन सा कार्य साध्य नहीं हो सकता? यह श्लोक क्षमा के नैतिक मूल्य पर बल देता है। शिक्षा में क्षमा का गुण बहुत महत्वपूर्ण है। विद्यार्थियों को यह सिखाया जा सकता है कि वे दूसरों की गलतियों को क्षमा करें और अपने मन में क्रोध या द्वेष न रखें। क्षमा एक महान गुण है, जिससे व्यक्ति समाज में प्रेम और शांति स्थापित कर सकता है।

अष्टादश पुराण शिक्षा के क्षेत्र में नैतिक और मानव मूल्यों को विकसित करने में अत्यंत सहायक हो सकते हैं। ये श्लोक विद्यार्थियों को जीवन में सत्य, धर्म, कर्तव्य, परोपकार, क्षमा, और संतोष जैसे मूल्यों का पालन करने की प्रेरणा देते हैं। इन नैतिक शिक्षाओं के द्वारा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव है, जो उन्हें न केवल एक अच्छा नागरिक बल्कि एक अच्छा इंसान भी बना सकता है।

- रामायण एक महाकाव्य है जो मानव और नैतिक मूल्यों का एक अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसके श्लोक और प्रसंग मानव धर्म, कर्तव्य, नैतिकता, और सच्चाई के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख श्लोक और उनके भावार्थ दिए गए हैं जो नैतिक और मानव मूल्यों पर आधारित हैं:

### 1. श्रीराम का धर्म और सत्य के प्रति आग्रह श्लोक (अयोध्या कांड, 18.30)

रघुकुल रीति सदा चली आई।

प्राण जाए पर वचन न जाई॥

**भावार्थ:** रघुकुल (राजा दशरथ का वंश) की यह परंपरा है कि प्राण भले ही चले जाएं, लेकिन जो वचन दे दिया गया हो, उसे निभाना ही होता है। यह श्लोक रामायण में श्रीराम के चरित्र को व्यक्त करता है, जहाँ उन्होंने पिता के वचन का पालन करने के लिए राज्य और सुखों का त्याग कर वनवास स्वीकार किया। यह श्लोक सिखाता है कि सत्य और वचन पालन सर्वोच्च नैतिक मूल्य हैं। व्यक्ति को अपने वचनों का पालन हर स्थिति में करना चाहिए, चाहे इसके लिए कितने भी कष्ट क्यों न सहने पड़ें।

### 2. श्रीराम का कर्तव्य पालन श्लोक (अयोध्या कांड, 22.9)

पितु मातु गुरु नारी सुमिरि सप्रेम सुभाय।

नीच करौं सबहि प्रनामु जद्यपि असक् सुभाय॥

**भावार्थ:** श्रीराम कहते हैं कि चाहे कोई कितना भी असभ्य या निम्न आचरण वाला हो, लेकिन मैं उसे पिताजी, माताजी, गुरु और स्त्रियों को प्रेमपूर्वक स्मरण कर नमस्कार करता हूँ। यह श्लोक बताता है कि व्यक्ति को हमेशा विनम्रता, आदर और सम्मान का भाव रखना चाहिए। श्रीराम अपने माता-पिता और गुरुओं के प्रति हमेशा समर्पित और आदरपूर्ण थे, और इसी तरह वे समाज के प्रति भी प्रेमभाव रखते थे।



यह सिखाता है कि हमें सबके प्रति समान और विनम्र दृष्टिकोण रखना चाहिए, चाहे वह व्यक्ति कोई भी हो।

### 3. मर्यादा का पालन श्लोक (किष्किंधा कांड, 3.34)

रामो विग्रहवान् धर्मः सद्धर्मस्य परायणः।

रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य च परंतपः॥

**भावार्थ:** श्रीराम धर्म के मूर्तिमान रूप हैं, धर्म का पालन करने वाले हैं और धर्म का अनुसरण करने वालों के रक्षक हैं। वह धर्म के द्वारा संसार के जीवों की रक्षा करते हैं। यह श्लोक श्रीराम की धर्म के प्रति निष्ठा को दर्शाता है। रामायण सिखाती है कि धर्म के मार्ग पर चलना और अपने कर्तव्यों का पालन करना ही मानव जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। श्रीराम का आदर्श चरित्र हमें सिखाता है कि हमें धर्म, मर्यादा और कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

### 4. भरत का भ्रातृ प्रेम और निष्ठा श्लोक (अयोध्या कांड, 112.23)

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

**भावार्थ:** माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान होती हैं। यह श्लोक भरत के अपने भाइयों और मातृभूमि के प्रति प्रेम और समर्पण का प्रतीक है। रामायण में भरत का यह वाक्य सिखाता है कि हमें अपने परिवार और जन्मभूमि के प्रति हमेशा प्रेम और निष्ठा रखनी चाहिए। यह श्लोक राष्ट्रभक्ति और पारिवारिक प्रेम के आदर्श मूल्य को दर्शाता है।

### 5. सीता का आदर्श पतिव्रता धर्म श्लोक (अरण्य कांड, 9.30)

पतिसंश्रयिणी नारी धर्मपत्नी पतिव्रता।

भार्या या साधुयुक्तस्य धर्मकामार्थसाधिनी॥

**भावार्थ:** एक आदर्श पतिव्रता स्त्री वह होती है जो अपने पति के साथ हर स्थिति में खड़ी रहती है, चाहे परिस्थिति कैसी भी हो। वह धर्म, काम और अर्थ के मार्ग में अपने पति की साथी होती है। यह श्लोक सीता के आदर्श पतिव्रता धर्म को दर्शाता है, जहाँ उन्होंने हर परिस्थिति में श्रीराम का साथ दिया। यह श्लोक नारी के धर्म, निष्ठा और समर्पण को उजागर करता है। यह सिखाता है कि एक पत्नी को अपने पति के साथ सच्ची निष्ठा और धर्म के साथ रहना चाहिए।

### 6. हनुमानजी की सेवा और भक्ति श्लोक (सुंदर कांड, 42.35)

राम काजु कीन्हे बिनु मोहि कहां विश्राम।



**भावार्थ:** हनुमानजी कहते हैं कि राम के काम को पूरा किए बिना मुझे विश्राम नहीं मिल सकता। यह श्लोक हनुमानजी की निःस्वार्थ सेवा और भक्ति का प्रतीक है। रामायण सिखाती है कि सच्ची भक्ति और सेवा का मार्ग ही सबसे महान है। हनुमानजी का चरित्र कर्तव्य, समर्पण और निस्वार्थ सेवा के आदर्शों को दर्शाता है, जो हर व्यक्ति के लिए प्रेरणादायक है।

#### 7. रावण का पतन और अधर्म का परिणाम श्लोक (लंका कांड, 107.3)

*विनाशकाले विपरीत बुद्धिः।*

**भावार्थ:** जब विनाश का समय आता है, तो व्यक्ति की बुद्धि विपरीत हो जाती है। यह श्लोक रावण के चरित्र को उजागर करता है, जो अपने अहंकार और अधर्म के कारण विनाश की ओर बढ़ा। यह श्लोक सिखाता है कि जब व्यक्ति अधर्म के मार्ग पर चलता है और उसकी बुद्धि अहंकार से भ्रमित हो जाती है, तो उसका पतन निश्चित होता है। यह हमें सिखाता है कि अधर्म और अहंकार से बचना चाहिए और हमेशा धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए।

#### 8. विभीषण का धर्म पालन श्लोक (लंका कांड, 6.12)

*धर्मो नष्टो हतो लोको लोको नष्टः सदा हतः।*

*रक्षसं स्वामिनं हित्वा कृता मित्रेषु तस्कराः॥*

**भावार्थ:** जब धर्म नष्ट हो जाता है, तब पूरा समाज नष्ट हो जाता है। धर्म को त्यागने वाले राक्षस लोग समाज का विनाश करते हैं। यह श्लोक विभीषण के द्वारा धर्म के पालन की शिक्षा देता है। विभीषण ने अपने भाई रावण के अधर्म का विरोध किया और श्रीराम का साथ दिया। यह सिखाता है कि जब भी अधर्म और धर्म के बीच संघर्ष हो, तो हमें धर्म का पक्ष लेना चाहिए, चाहे इसके लिए हमें कितना भी बड़ा त्याग करना पड़े।

- रामायण हमें नैतिक और मानव मूल्यों के आदर्श प्रस्तुत करती है, जिसमें धर्म, सत्य, कर्तव्य, निष्ठा, सेवा और परोपकार जैसे गुणों को विशेष महत्त्व दिया गया है। इन श्लोकों और प्रसंगों से हमें यह सीख मिलती है कि जीवन में धर्म और सत्य का पालन करना ही मानव जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य होना चाहिए। महाभारत में नैतिक और मानव मूल्यों को लेकर कई श्लोक हैं जो धर्म, सत्य, कर्तव्य, और न्याय के महत्त्व को दर्शाते हैं। ये श्लोक जीवन में सही मार्गदर्शन देने के साथ ही व्यक्ति को उच्च नैतिकता का पालन करने के लिए प्रेरित करते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख श्लोक और उनके भावार्थ दिए जा रहे हैं:

#### 1. धर्म का पालन और परिणाम (महाभारत, उद्योग पर्व 33.13)

*धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।*

*तस्माद्धर्मो न हन्तव्यः मानो धर्मो हतोवधीत्॥*

**भावार्थ:** धर्म का पालन न करने से धर्म नष्ट हो जाता है, और धर्म का पालन करने से धर्म हमारी रक्षा करता है। इसलिए धर्म को कभी नष्ट नहीं करना चाहिए, क्योंकि धर्म का नाश करने से व्यक्ति स्वयं का नाश कर लेता है। यह श्लोक सिखाता है कि धर्म का पालन हर परिस्थिति में करना चाहिए। धर्म की रक्षा करने से वह व्यक्ति को हर कठिनाई से बचाता है, जबकि धर्म का त्याग करने से व्यक्ति का जीवन संकट में पड़ जाता है। नैतिकता और धर्म का पालन मनुष्य का कर्तव्य है।

## 2. नैतिकता और सत्य का महत्त्व (महाभारत, उद्योग पर्व 37.18)

*सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।*

*येनाऽऽक्रमत् यथ्यास्य पन्था देवाः सर्वे तथाऽसुराः॥*

**भावार्थ:** सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं। सत्य के मार्ग से ही देवताओं का पथ प्रशस्त हुआ है और उसी पथ पर चलकर सभी देवता और असुर गए हैं। यह श्लोक सत्य और नैतिकता के पालन पर जोर देता है। सत्य का मार्ग कठिन हो सकता है, लेकिन अंततः सत्य की ही विजय होती है। यह सिखाता है कि व्यक्ति को किसी भी परिस्थिति में सत्य का त्याग नहीं करना चाहिए, क्योंकि यही सबसे बड़ा नैतिक मूल्य है।

## 3. कर्तव्य का पालन (महाभारत, वन पर्व 313.27)

*स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।*

**भावार्थ:** अपने धर्म में मर जाना भी कल्याणकारी है, लेकिन दूसरे के धर्म का पालन करना भयावह होता है। यह श्लोक व्यक्ति के कर्तव्य और धर्म पर जोर देता है। हर व्यक्ति का एक स्वधर्म होता है, और उसका पालन करना ही सही मार्ग है। दूसरों के धर्म में हस्तक्षेप या उसे अपनाने से व्यक्ति अपने मार्ग से भटक सकता है। इसलिए अपने धर्म का पालन सबसे श्रेष्ठ है, चाहे उसमें कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न हों।

## 4. सच्ची मित्रता (महाभारत, शांति पर्व 257.4)

*उपकारफले नित्यं मित्रं मित्रेण संततम्।*

*यथा धेनुः क्षीरफला स्वपण्या वासितासदा॥*

**भावार्थ:** सच्चा मित्र वही होता है जो बिना किसी लाभ की उम्मीद के हमेशा मित्र का उपकार करता है, ठीक उसी प्रकार जैसे गाय बिना किसी स्वार्थ के हमेशा दूध देती है। यह श्लोक सच्ची मित्रता और परोपकार को दर्शाता है। एक सच्चे मित्र का काम केवल अपने लाभ के लिए नहीं होता, बल्कि वह हमेशा अपने मित्र के भले के लिए कार्य करता है। नैतिकता और मानव मूल्यों में परोपकार और निस्वार्थता का बहुत महत्त्व है।

### 5. अधिकार और कर्तव्य (महाभारत, शांति पर्व 60.7)

न मानुषाणां जनिता कश्चिदन्यः, कर्तव्यमेवं सततं यत्नयुक्तैः।

कर्तव्यकामो भवति प्रजानां, यथा गुरुर्देवकृतो ह्यस्य लोके॥

**भावार्थ:** मनुष्यों का कोई भी ऐसा जन्मदाता नहीं है जो उनका कर्तव्य न हो। संसार में जैसे गुरु या देवता अपने कर्तव्यों को निभाते हैं, वैसे ही मनुष्यों को भी सदैव अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। यह श्लोक व्यक्ति को कर्तव्यपालन की शिक्षा देता है। कर्तव्य मानव जीवन का आधार है, और इसका पालन गुरु या देवता की भाँति निस्वार्थ और सही तरीके से करना चाहिए। यह नैतिकता का महत्त्व बताता है, जिसमें हर व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का निष्ठा से पालन करना चाहिए।

### 6. क्षमा का महत्त्व (महाभारत, आदिपर्व 74.45)

क्षमा धर्मस्य भूषणं क्षमा सत्यं च सत्यवत्।

क्षमा यज्ञेषु वृत्तं च क्षमा शौर्यं तथैव च॥

**भावार्थ:** क्षमा धर्म का आभूषण है, क्षमा ही सच्चाई है और क्षमा ही यज्ञ है। क्षमा शौर्य का प्रतीक है। यह श्लोक क्षमा के नैतिक मूल्य को दर्शाता है। क्षमा का भाव न केवल मनुष्य को महान बनाता है, बल्कि यह धर्म, सत्य और वीरता का प्रतीक भी है। क्षमा मनुष्य के नैतिक आचरण में सबसे महत्वपूर्ण गुण है, जो उसे ऊँचाइयों तक पहुँचाता है।

### 7. दान का महत्त्व (महाभारत, अनुशासन पर्व 60.6)

दानं धर्मस्य साधनं दानं यज्ञस्य कारणं।

दानेन सकलाः पृथ्वी निर्जिता दानमाश्रिता॥

**भावार्थ:** दान धर्म का साधन है, दान यज्ञ का कारण है, और दान के माध्यम से ही पूरी पृथ्वी पर विजय प्राप्त की जा सकती है। यह श्लोक दान की महत्ता पर जोर देता है। दान न केवल धार्मिक कार्यों का प्रमुख आधार है, बल्कि यह मानवता और नैतिकता का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। समाज की उन्नति और मानव सेवा के लिए दान का विशेष महत्व है।

### 8. अहिंसा का महत्त्व (महाभारत, शांति पर्व 262.5)

अहिंसा परमो धर्मः धर्म हिंसा तथैव च।

धर्म हिंसा तथैव च यदा रक्षार्थं धर्मस्य॥

**भावार्थ:** अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है, लेकिन जब धर्म की रक्षा के लिए हिंसा आवश्यक हो, तो वह भी धर्म ही होती है। यह श्लोक अहिंसा की महत्ता को बताता है, लेकिन साथ ही यह भी कहता है कि जब धर्म और न्याय की रक्षा के लिए हिंसा अनिवार्य हो जाए, तो वह भी धर्म का ही अंग है। यह सिखाता है कि हर परिस्थिति में धर्म का पालन सबसे महत्वपूर्ण है, चाहे इसके लिए कठिन रास्ता ही क्यों न चुनना पड़े।

- महाभारत के ये श्लोक और उनका भावार्थ हमें बताते हैं कि मानव जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक सुख नहीं, बल्कि धर्म, सत्य, कर्तव्य, परोपकार, और नैतिकता का पालन है। इन आदर्श मूल्यों को अपनाकर ही व्यक्ति जीवन में सफलता और शांति प्राप्त कर सकता है। भगवद गीता में कई श्लोक हैं जो मानव जीवन और नैतिक मूल्यों के बारे में महत्वपूर्ण शिक्षाएं देते हैं। ये श्लोक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों, नैतिकता, और जीवन के सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख श्लोक दिए गए हैं जो मानव और नैतिक मूल्यों पर प्रकाश डालते हैं

भगवतगीता में मानव तथा नैतिक मूल्यों का महत्त्व :

### 1. श्लोक 2.47 (कर्म का महत्व)

*कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।*

*मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥*

**भावार्थ:** तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने में है, फल में नहीं। इसलिए, कर्म का फल तुम्हारे उद्देश्य का कारण न बने और न ही तुम कर्म न करने की प्रवृत्ति में आसक्त हो। यह श्लोक सिखाता है कि हमें अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए और उनके परिणाम की चिंता किए बिना कर्म में लगे रहना चाहिए। यह नैतिक मूल्य है कि व्यक्ति को अपने कर्म के प्रति ईमानदार और निष्पक्ष होना चाहिए।

### 2. श्लोक 3.21 (नेतृत्व और आदर्श)

*यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।*

*स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥*

**भावार्थ:** जो भी श्रेष्ठ पुरुष करता है, वही अन्य लोग अनुसरण करते हैं। वह जिस मापदंड को स्थापित करता है, उसी का अनुसरण लोग करते हैं। यह श्लोक नेतृत्व और आदर्श की शिक्षा देता है। श्रेष्ठ पुरुषों का आचरण नैतिकता और समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारी को दर्शाता है, क्योंकि समाज उन्हें देखकर सीखता है। इसलिए, नैतिक आचरण रखना समाज के लिए आदर्श स्थापित करना है।

### 3. श्लोक 16.3 (दैवी गुण)

*अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।*

*दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्॥*

**भावार्थ:** अहिंसा, सत्य, क्रोध का अभाव, त्याग, शांति, दूसरों की बुराई न करना, दया, दूसरों की संपत्ति पर लोभ न करना, कोमलता, लज्जा, और चपलता का अभाव – ये सब दैवी गुण हैं। यह श्लोक नैतिक मूल्यों की महत्ता बताता है। अहिंसा, सत्य, दया और शांति जैसे गुणों को जीवन में अपनाने से मनुष्य उच्च नैतिक मानदंडों का पालन कर सकता है और दैवी गुणों से संपन्न हो सकता है।

#### 4. श्लोक 2.20 (आत्मा का अमरत्व)

न जायते म्रियते वा कदाचित् नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

**भावार्थ:** आत्मा न तो जन्म लेती है और न मरती है। न ही यह कभी अस्तित्व में आई थी और न ही भविष्य में इसका अंत होगा। यह अजन्मा, शाश्वत, अविनाशी और पुरातन है, और शरीर के नष्ट होने पर भी इसका विनाश नहीं होता। यह श्लोक आत्मा की अमरता और शाश्वतता के बारे में बताता है। यह सिखाता है कि मृत्यु केवल शरीर की होती है, आत्मा अमर है। इस श्लोक के द्वारा मनुष्य को यह संदेश मिलता है कि उसे अपने जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक उद्देश्यों को समझकर निर्भय रहना चाहिए।

#### 5. श्लोक 18.66 (समर्पण और शरणागति)

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज।

अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

**भावार्थ:** सभी धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आओ। मैं तुम्हें सभी पापों से मुक्त कर दूँगा, तुम चिंता मत करो। यह श्लोक समर्पण और शरणागति के बारे में है। जब मनुष्य अपने अहंकार और संकीर्ण विचारों को छोड़कर ईश्वर की शरण में आता है, तो उसे सभी पापों से मुक्ति मिलती है। इस श्लोक से नैतिकता का संदेश मिलता है कि हमें ईश्वर और धर्म के प्रति आस्था और समर्पण रखना चाहिए।

#### 6. श्लोक 6.5 (आत्म-संवर्धन)

उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानं नात्मानमवसादयेत्।

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥

**भावार्थ:** व्यक्ति को स्वयं अपने आत्मा से उठाना चाहिए और कभी अपने आपको गिराना नहीं चाहिए, क्योंकि आत्मा ही व्यक्ति का मित्र है और आत्मा ही उसका शत्रु। यह श्लोक आत्म-संवर्धन और आत्म-निर्भरता पर जोर देता है। व्यक्ति के नैतिक मूल्य और उसकी आंतरिक शक्ति उसे उन्नति की ओर ले जाती है। यह आत्मविकास और नैतिकता के लिए प्रेरित करता है।

इन श्लोकों के माध्यम से भगवद गीता मानव जीवन के नैतिक मूल्यों, कर्तव्यों, और आध्यात्मिकता की शिक्षा देती है। यह सिखाती है कि सही कर्म, नैतिकता, और ईश्वर में आस्था से जीवन को सार्थक और संतुलित बनाया जा सकता है।

- भागवत पुराण में मानव और नैतिक मूल्यों के बारे में कई श्लोक हैं, जो धर्म, कर्तव्य, सत्य, और परोपकार की महत्ता पर प्रकाश डालते हैं। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण श्लोक और उनके भावार्थ दिए जा रहे हैं:

1. श्लोक (स्कंध 1, अध्याय 2, श्लोक 6)

सर्वे पुंसां परो धर्मो यतो भक्तिरधोक्षजे।

अहेतुक्यप्रतिहता ययाऽत्मा सुप्रसीदति॥

**भावार्थ:** मनुष्यों का सर्वोच्च धर्म वही है जिससे परमात्मा के प्रति निष्काम भक्ति उत्पन्न हो, जो न किसी लाभ की कामना से की जाती है और न ही किसी परिस्थिति से रुकती है। ऐसी भक्ति से आत्मा में शांति प्राप्त होती है। यह श्लोक मानव जीवन में भक्ति और धर्म की सर्वोच्चता को बताता है। निष्काम भक्ति और सही आचरण मनुष्य के जीवन का उद्देश्य होना चाहिए, और इससे आत्मा को सच्ची शांति मिलती है। नैतिक मूल्यों के पालन से व्यक्ति का मन निर्मल होता है।

2. श्लोक (स्कंध 11, अध्याय 19, श्लोक 36)

शमो दमस्तपः शौचं सन्तोषः क्षान्तिरार्जवम्।

ज्ञानं दया च भूतेषु अलोलुप्त्वं समत्वता॥

**भावार्थ:** मन की शांति, इन्द्रियों का नियंत्रण, तप, पवित्रता, संतोष, क्षमा, सरलता, ज्ञान, प्राणियों के प्रति दया, लोभ का अभाव, और समभाव – ये सभी नैतिक गुण हैं। यह श्लोक बताता है कि मनुष्य में कौन-कौन से नैतिक गुण होने चाहिए। क्षमा, संतोष, दया, और सत्य जैसे नैतिक गुणों को अपनाने से व्यक्ति का जीवन सफल और समाज के लिए हितकारी होता है। ये गुण मानवता और नैतिकता के आदर्श माने गए हैं।

3. श्लोक (स्कंध 7, अध्याय 11, श्लोक 8)

शुश्रूषा श्रद्धया नित्यं मायुक्तानां गुरोः कृपा।

धर्मेण हीनं धर्मज्ञे सत्यं स्वधर्मनिष्ठया॥

**भावार्थ:** गुरु की सेवा, श्रद्धा, और सत्य का पालन – ये नैतिक धर्म हैं। धर्म के मार्ग पर बिना विचलित हुए अपने कर्तव्यों का पालन करना ही सच्चा धर्म है। इस श्लोक में गुरु और धर्म के प्रति श्रद्धा और सेवा को महत्त्व दिया गया है। नैतिकता का मूल यह है कि व्यक्ति सत्य, धर्म और कर्तव्य के मार्ग पर चले और अपनी ज़िम्मेदारियों का पालन करें।

4. श्लोक (स्कंध 3, अध्याय 28, श्लोक 4)

मौनेनात्मनि संरोधं भावना सत्त्वसम्भवा।

आत्मन्येवात्मना योगी शांतिं निर्वाणमृच्छति॥

**भावार्थ:** मौन, आत्मनियंत्रण और शांतचित्त रहकर योगी को अपने सत्त्व से आत्मा की भावना को विकसित करना चाहिए। इस प्रकार, वह अंततः शांति और मोक्ष को प्राप्त करता है। यह श्लोक मानसिक शांति, आत्म-नियंत्रण, और आत्मा की खोज की बात करता है। नैतिकता और आध्यात्मिकता का पालन करते हुए मनुष्य जीवन में शांति और मोक्ष प्राप्त कर सकता है। आत्म-नियंत्रण और संयम नैतिक जीवन का आधार है।

*5. श्लोक (स्कंध 10, अध्याय 22, श्लोक 35)*

*परोपकाराय भवत्यर्थः पुण्यायैव च कर्मणि।*

*नात्मनः सुखायैव लोकस्मिन्यः समाहितः॥*

**भावार्थ:** मनुष्य के द्वारा किया गया धन अर्जन और कर्म केवल अपने सुख के लिए नहीं होना चाहिए, बल्कि परोपकार और धर्म के मार्ग पर चलने के लिए होना चाहिए। यह श्लोक सिखाता है कि हमें अपने कर्म और धन का उपयोग सिर्फ व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि समाज के कल्याण और दूसरों की भलाई के लिए करना चाहिए। परोपकार और निस्वार्थ सेवा ही सच्ची नैतिकता का परिचायक है।

*6. श्लोक (स्कंध 12, अध्याय 3, श्लोक 51)*

*सत्संगात्सञ्जायते ज्ञानं ज्ञानाद्योगः प्रवर्तते।*

*योगाद्धर्मं ध्रुवं प्राप्य जन्म दुःखविनिर्गमः॥*

**भावार्थ:** सत्संग से ज्ञान की प्राप्ति होती है, ज्ञान से योग उत्पन्न होता है, योग से धर्म की प्राप्ति होती है, और धर्म के द्वारा जन्म और मृत्यु के दुःखों से मुक्ति मिलती है। इस श्लोक में सत्संग, यानी अच्छे और धार्मिक व्यक्तियों के साथ रहने का महत्त्व बताया गया है। यह सिखाता है कि नैतिक और धार्मिक जीवन से ही व्यक्ति जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। सत्य और धर्म का पालन करने से जीवन सफल होता है।

भागवत पुराण के इन श्लोकों से यह स्पष्ट होता है कि मानव जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक सुख नहीं है, बल्कि नैतिकता, धर्म और कर्तव्य का पालन करना है।

सत्य, अहिंसा, दया, परोपकार, संयम जैसे नैतिक गुणों को अपनाकर मनुष्य जीवन को श्रेष्ठ बना सकता है।

शिक्षा में नैतिक मूल्यों का महत्व बहुत गहरा है, और भारतीय साहित्य में कई दोहे और कविताएँ इस विषय पर प्रकाश डालते हैं। यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

▪ **दोहे:**

1. कबीरदास जी के अनुसार:

*बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।*

*पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर॥*

**संदर्भ:** इस दोहे में कबीरदास जी ने नैतिकता का महत्व बताया है। यहाँ 'बड़ा होना' बाहरी उपलब्धियों और भौतिक सफलता का प्रतीक है, जो दूसरों की मदद नहीं कर सकती। सही शिक्षा वही है जो दूसरों के लिए उपयोगी हो।

2. तुलसीदास जी के अनुसार:

*सच्चे प्रेम की रीति, निभावै गाढ़े समय।*

*नहीं तजै विपति में, असल सतगुरु समै॥*

**संदर्भ:** इस दोहे में नैतिकता और सच्चाई का महत्व बताया गया है। शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति नहीं, बल्कि सच्चाई और नैतिकता के मार्ग पर चलने का अभ्यास भी है।

3. रामधारी सिंह 'दिनकर' के अनुसार:

*मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है।*

*गुण बड़े, दोष भले लाख हो, उजला सदा सूर्य रहता है॥*

**संदर्भ:** इस कविता में नैतिक मूल्यों और मानवीय गुणों के महत्व पर जोर दिया गया है। शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्राप्त करना नहीं है, बल्कि व्यक्तित्व का विकास करना और सही-गलत का भेद करना सिखाना भी है।

4. सुभद्राकुमारी चौहान के अनुसार :

*वीरों का कैसा हो बसंत? आ रही हिमालय से पुकार,*

*है उदधि गर्जता बार-बार, प्राची पश्चिम भू नभ अपार;*

*सब पूछ रहे हैं दिग-दिगंत वीरों का कैसा हो बसंत?*

**संदर्भ:** इस कविता में साहस और कर्तव्यपरायणता को नैतिक मूल्यों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बच्चों में साहस, कर्तव्य और नैतिकता के बीज बोना भी है। ये रचनाएँ शिक्षा में नैतिक मूल्यों के महत्व को उजागर करती हैं और समाज के विकास में उनके योगदान को रेखांकित करती हैं।



- 'धार्मिक शिक्षा समिति' के सुझाव- जनवरी 1944, केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड ने लाहौर के विशप बार्ने की अध्यक्षता में, 'धार्मिक शिक्षा समिति' की नियुक्ति की, और इससे शिक्षा-संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा दिये जाने के संबंध में सुझाव मांगे।

इस समिति ने अपनी 1946 की रिपोर्ट में धार्मिक और नैतिक शिक्षा की विषय-सामग्री के संबंध में निम्न सुझाव दिए हैं।-

1. शिक्षा की प्रत्येक योजना में जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का स्थान दिया जाये।
2. सब धर्मों के सामान्य नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धान्तों को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाये।

'विश्वविद्यालय शिक्षा-आयोग' के सुझाव 1948 में डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में नियुक्त किए जाने वाले 'विश्वविद्यालय शिक्षा-आयोग' ने धार्मिक और नैतिक शिक्षा की विषयवस्तु के बारे में अधोलिखित सुझाव दिए हैं। -

- **विद्यालय स्तर विशेष रूप से माध्यमिक स्तर के लिए 'आयोग' के सुझाव निम्नलिखित हैं। -**

1. छात्रों को महान व्यक्तियों की जीवनियाँ पढ़ाई जाये।
2. छात्रों को श्रेष्ठ नैतिक और धार्मिक सिद्धान्तों को व्यक्त करने वाले कहानियाँ पढ़ाये जाए।
3. जीवनियों में महान व्यक्तियों के उच्च विचारों और श्रेष्ठ भावनाओं का समावेश किया जाए।
4. कहानियाँ और जीवनियाँ श्रद्धा, सुंदरता और सज्जनता से लिखी जाए।

- **विश्वविद्यालय स्तर के लिए 'आयोग' के सुझाव इस प्रकार हैं। -**

1. डिग्री कोर्स के प्रथम वर्ष में बुद्ध, कन्फ्यूसियस, जोरोस्टर, सुकरात, ईसा, शंकर, रामानुज, माधव, कबीर, नानक, गांधी आदि महान धार्मिक नेताओं की जीवनियाँ पढ़ाई जाए।
2. द्वितीय वर्ष संसार के धार्मिक ग्रंथों में से सार्वभौमिक महत्व के चुने हुए भागों को पढ़ाया जाए।
3. तृतीय वर्ष में धर्म-दर्शन की मुख्य समस्याओं का अध्ययन किया जाए।
4. छात्रों में नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करने के लिए भारत में अन्य देशों की संस्कृतियों से सामग्री का संकलन किया जाए।
5. डिग्री कोर्स के पाठ्यक्रम में संसार के विभिन्न धर्मों के सामान्य अध्ययन को स्थान दिया जाए।

इस संदर्भ में निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं।

1. सामाजिक नियम जो सामाजिक आदर्शों की प्राप्ति में सहायक होते हैं नैतिक नियम होते हैं और उनको पालन करने का भाव अथवा शक्ति नैतिकता है।

2. धर्म, जीवन के सत्यों, मूल्यों और कर्तव्यों के लिए एक संज्ञा है और शिक्षा इनके प्राप्ति का साधन है।
  3. नैतिक शिक्षा के अंतर्गत शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य का प्रशिक्षण, शिष्टाचार, उपयुक्त सामाजिक आचरण, नागरिक अधिकार- कर्तव्य और धार्मिक प्रशिक्षण आदि क्रियाएं समाहित हैं।
  4. भारतीय संविधान की 19वीं धारा सभी को अपने धर्मों का अनुसरण करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करती है।
  5. बालकों में नैतिकता का विकास करने के लिए विद्यालय अपने विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा शैक्षणिक कार्यक्रमों का आयोजन कर सकता है।
- नैतिकता के तीन प्रमुख आधार: विनाशकारी आचरण से दूर रहना, अनुशासन, दूसरों की सहायता करना। नैतिक आचरण के मूलाधार” है और यह एक बड़ा ही व्यापक विषय है। जब हम बौद्ध धर्म में नैतिकता या नैतिक आचरण की बात करते हैं तो हमारा आशय व्यवहार के तीन अलग-अलग क्षेत्रों से होता है। पहला विषय विनाशकारी व्यवहार से दूर रहने से सम्बंधित है, इसका अर्थ यह है कि चाहे हमारी मंशा किसी को नुकसान पहुँचाने की हो या न हो, हम क्रोध या लालच या स्वार्थ के वशीभूत हो कर आचरण न करें। आप जानते हैं कि कभी-कभी हम स्वार्थपूर्ण व्यवहार करते हैं और हमें इसका आभास तक नहीं होता कि हम स्वार्थी हो रहे हैं, जब कि वास्तव में हमारा उद्देश्य किसी को चोट पहुँचाना नहीं होता है, फिर भी हमारे ऐसे व्यवहार से बड़ा नुकसान हो जाता है और बड़ी परेशानियाँ खड़ी हो जाती हैं। दूसरे प्रकार का नैतिक आचरण दरअसल रचनात्मक कार्यों में संलग्न होना है।
  - कड़ी मेहनत करके अध्ययन करते हुए अच्छी शिक्षा हासिल करना इसका एक उदाहरण है। इसके लिए बड़े अनुशासन की आवश्यकता होती है – अध्ययन करने, ज्ञानार्जन करने के लिए आत्मानुशासन। लेकिन यदि हम अपने जीवन में कुछ सकारात्मक हासिल करना चाहते हैं, तो उसके लिए हमें योग्यताएं हासिल करनी चाहिए; हमें अभ्यास करना चाहिए, और इसके लिए अनुशासन की आवश्यकता होती है। और यह नीतिशास्त्र का क्षेत्र है। तीसरे प्रकार की नैतिकता यह है कि हम वास्तव में दूसरों की सहायता करने के कार्यों से जुड़ें। सिर्फ अच्छे गुणों को विकसित करने का अभ्यास करना ही काफी नहीं है, क्योंकि हम एक समाज में रहते हैं और समाज में अपने सद्गुणों और प्रतिभाओं और योग्यताओं को दूसरों के साथ बांटना बहुत महत्वपूर्ण होता है। हमारे पास जो भी क्षमताएं हों, हम उनका उपयोग दूसरों की सहायता करने के लिए कर सकते हैं।
  - नैतिक जीवन ही सुखी जीवन का मार्ग है। हमें यह समझना चाहिए कि नैतिकता पर आधारित जीवन व्यतीत करना सुखमय जीवन जीने का मार्ग है और इससे हमें दूसरों को और अधिक सुख प्रदान करने में मदद मिलती है, जिससे स्वयं हमारी खुशी में ही वृद्धि होगी। हमारा भविष्य स्वयं हमारे ऊपर ही निर्भर करता है। हम अभी या भविष्य में किस प्रकार का व्यक्ति बनेंगे – यह पूरी तरह हमारे अपने ऊपर निर्भर है। अतः चाहे अभी हम कोई स्कूली युवा हों, या वयस्क या कोई वृद्ध हों, हम सभी इस मार्ग का पालन कर सकते हैं। मूल्य बोध को विकसित करने के लिए हमें इस बात को समझना होगा कि हमारे भीतर सकारात्मक गुण होते हैं। हम सभी की एक काया है जिसकी सहायता से हम दूसरों के साथ आचरण-व्यवहार कर सकते हैं, कार्यों को सम्पादित कर सकते हैं। हम सभी के पास स्वयं को व्यक्त करने की क्षमता है। हम सभी के पास एक चित्त है, ताकि हम बातों को समझ सकें; सीख सकें। और हम सभी के पास एक हृदय है – भावनाएं हैं – हमारे पास स्नेह और करुणा की भावनाएं।

- ये कुछ बातें हैं जो हम सभी के पास हैं, हम चाहे जो भी हों। और हमें यह समझना चाहिए कि यही हमारे काम करने के औज़ार हैं। अब मैं इनका कैसा उपयोग करता हूँ, यह दरअसल मुझ पर ही निर्भर है। और यदि हमें यह अहसास हो जाए कि हमारे पास अपना काम करने के लिए ये आधारभूत उपादान उपलब्ध हैं, तो इससे हमारे भीतर एक आत्म-महत्ता बोध, आत्म-सम्मान का बोध जाग्रत होता है। नैतिक जीवन ही सुखी जीवन का मार्ग है। हमें यह समझना चाहिए कि नैतिकता पर आधारित जीवन व्यतीत करना सुखमय जीवन जीने का मार्ग है और इससे हमें दूसरों को और अधिक सुख प्रदान करने में मदद मिलती है, जिससे स्वयं हमारी खुशी में ही वृद्धि होगी। हमारा भविष्य स्वयं हमारे ऊपर ही निर्भर करता है। हम अभी या भविष्य में किस प्रकार का व्यक्ति बनेंगे – यह पूरी तरह हमारे अपने ऊपर निर्भर है। अतः चाहे अभी हम कोई स्कूली युवा हों, या वयस्क या कोई वृद्ध हों, हम सभी इस मार्ग का पालन कर सकते हैं।
- नैतिक मूल्यों की आवश्यकता एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है, विशेष रूप से जब हम यह समझते हैं कि छात्र समाज के जिम्मेदार और सक्षम नागरिक बनने की ओर अग्रसर होते हैं। विभिन्न परिदृश्यों में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता पर एक विश्लेषणपूर्ण दृष्टिकोण निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है:

### 1. शिक्षा और व्यक्तिगत विकास:

ईमानदारी और विश्वास: छात्रों के लिए ईमानदारी और विश्वास महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य हैं, जो उनके व्यक्तिगत और शैक्षणिक जीवन में सफलता प्राप्त करने में सहायक होते हैं। ईमानदारी से किए गए प्रयास और सही मूल्यांकन छात्रों की वास्तविक क्षमताओं को उजागर करते हैं और आत्म-विश्वास को बढ़ाते हैं।

सहानुभूति और सहयोग: सहानुभूति और सहयोग की भावना छात्रों को उनके साथियों के प्रति समझदारी और सहयोगिता विकसित करने में मदद करती है, जिससे एक सकारात्मक और सहयोगी शैक्षणिक वातावरण तैयार होता है।

### 2. समाजिक जिम्मेदारी और आदर्श नागरिकता:

न्याय और समानता: नैतिक मूल्यों का पालन समाज में न्याय और समानता की भावना को बढ़ावा देता है। छात्रों को नैतिक मूल्यों के प्रति संवेदनशील बनाना उन्हें समाज में समानता और न्याय सुनिश्चित करने में सक्षम बनाता है।

पर्यावरण और सामाजिक उत्तरदायित्व: नैतिक शिक्षा छात्रों को पर्यावरणीय संरक्षण और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति जागरूक करती है, जिससे वे अपनी गतिविधियों को समाज और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार ढंग से संचालित करते हैं।

### 3. कठिन परिस्थितियों में निर्णय लेना:

सच्चाई और ईमानदारी: कठिन परिस्थितियों में नैतिक मूल्यों का पालन करना छात्रों को सही और गलत के बीच अंतर समझने में मदद करता है। सच्चाई और ईमानदारी के प्रति प्रतिबद्धता छात्रों को सही निर्णय लेने में सक्षम बनाती है, भले ही परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों।

धैर्य और आत्म-नियंत्रण: नैतिक शिक्षा छात्रों को धैर्य और आत्म-नियंत्रण सिखाती है, जो कठिन परिस्थितियों में तनाव और दबाव को प्रबंधित करने में सहायक होता है।

#### 4. व्यक्तिगत और सामाजिक संबंध:

इज्जत और सम्मान: नैतिक मूल्य छात्रों को दूसरों के प्रति सम्मान और इज्जत का भाव विकसित करने में मदद करते हैं, जिससे वे स्वस्थ और सकारात्मक व्यक्तिगत और सामाजिक संबंध बना सकते हैं।

सदाचार और जिम्मेदारी: छात्रों को सदाचार और जिम्मेदारी का पालन करने के लिए प्रेरित करना उन्हें जीवन में सही मार्ग पर चलने और अपने कार्यों के परिणामों को समझने में मदद करता है।

#### 5. आध्यात्मिक और मानसिक स्वास्थ्य:

आत्म-संयम और संतुलन: नैतिक मूल्यों का पालन मानसिक शांति और आत्म-संयम की भावना को बढ़ावा देता है। यह छात्रों को आंतरिक संतुलन और स्थिरता प्राप्त करने में मदद करता है, जो तनाव और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को कम करता है।

आत्म-प्रेरणा और नैतिक दिशा: नैतिक मूल्यों की समझ छात्रों को आत्म-प्रेरणा और सही दिशा प्रदान करती है, जिससे वे जीवन के विभिन्न पहलुओं में एक स्पष्ट उद्देश्य और दिशा के साथ आगे बढ़ सकते हैं।

इन परिदृश्यों में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता न केवल व्यक्तिगत विकास और समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए है, बल्कि यह छात्रों को एक जिम्मेदार और नैतिक नागरिक बनाने की दिशा में भी सहायक है। नैतिक शिक्षा और मूल्यों के महत्व को समझाना और उन्हें व्यवहार में लाना, छात्रों के समग्र विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- बच्चों के कुप्रबंधन, छोटे-छोटे कारणों पर क्रोधित होना और मानसिक रूप से कमजोर होना एक सामान्य समस्या है। ऐसे में, नैतिक मूल्यों की शिक्षा और पालन उन्हें बेहतर तरीके से समझने और संभालने में मदद कर सकता है। यहाँ पर कुछ तरीके दिए गए हैं, जिनसे नैतिक मूल्य इस संदर्भ में सहायक हो सकते हैं:

##### 1. आत्म-नियंत्रण और धैर्य:

सकारात्मक दृष्टिकोण: नैतिक मूल्यों की शिक्षा बच्चों को आत्म-नियंत्रण और धैर्य का महत्व समझाती है। जब बच्चे आत्म-नियंत्रण सीखते हैं, तो वे छोटी-छोटी बातों पर क्रोधित होने की बजाय ठंडे दिमाग से सोचना शुरू करते हैं।

प्रेरणा और अनुशासन: नैतिक मूल्य बच्चों को अनुशासन और सकारात्मक आदतें सिखाते हैं, जिससे वे छोटी-छोटी परेशानियों का सामना कर सकें और मानसिक रूप से मजबूत बन सकें।

##### 2. समझ और सहानुभूति:

नैतिक मूल्यों की शिक्षा बच्चों को दूसरों के प्रति सम्मान और सहानुभूति की भावना विकसित करने में मदद करती है। जब बच्चे दूसरों की भावनाओं को समझते हैं और सम्मान करते हैं, तो वे स्वयं भी अधिक संयमित और शांत रहते हैं।

सहानुभूति का विकास: बच्चों को यह समझाने में मदद करता है कि दूसरे लोग भी अपनी समस्याओं और संघर्षों का सामना कर रहे हैं, जिससे वे खुद को कम तनावपूर्ण महसूस करते हैं और छोटी बातों पर क्रोधित नहीं होते।

### 3. सही और गलत का भेद:

मूल्य आधारित निर्णय: नैतिक शिक्षा बच्चों को सही और गलत का भेद सिखाती है, जिससे वे समझ पाते हैं कि छोटी बातों पर क्रोधित होना सही नहीं है। यह उन्हें समझने में मदद करता है कि अपने व्यवहार को सुधारना और सकारात्मक प्रतिक्रिया देना अधिक महत्वपूर्ण है।

नैतिक दायित्व: नैतिक मूल्यों की शिक्षा बच्चों को यह सिखाती है कि हर व्यक्ति का एक नैतिक दायित्व होता है, जिसे निभाना महत्वपूर्ण है। इससे वे अपनी भावनाओं को नियंत्रित करना सीखते हैं और आत्म-संयम बनाए रखते हैं।

### 4. सकारात्मक स्वीकृति और प्रेरणा:

आत्म-संवेदनशीलता: नैतिक मूल्य बच्चों को आत्म-संवेदनशीलता और आत्म-स्वीकृति का महत्व समझाते हैं। जब बच्चे अपने आप को और अपनी भावनाओं को स्वीकार करते हैं, तो वे छोटी-छोटी बातों पर क्रोधित होने के बजाय समस्या को हल करने की कोशिश करते हैं।

सकारात्मक समर्थन: नैतिक मूल्यों की शिक्षा बच्चों को सकारात्मक सोच और समाधान-उन्मुख दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देती है, जिससे वे छोटी-छोटी समस्याओं पर अधिक क्रोधित और परेशान नहीं होते।

### 5. सामाजिक और व्यक्तिगत जिम्मेदारी:

जिम्मेदारी की भावना: नैतिक शिक्षा बच्चों में जिम्मेदारी की भावना विकसित करती है, जिससे वे अपने कार्यों और भावनाओं के परिणामों को समझने लगते हैं। जब बच्चे अपनी जिम्मेदारियों को समझते हैं, तो वे छोटी समस्याओं पर जल्दी गुस्सा नहीं होते और उन्हें सुलझाने के लिए समझदारी से काम करते हैं।

सामाजिक आदर्श: नैतिक मूल्यों की शिक्षा बच्चों को सामाजिक आदर्शों के प्रति जागरूक करती है, जिससे वे समाज में उचित और सम्मानजनक व्यवहार अपनाते हैं और व्यक्तिगत विवादों को कम महत्व देते हैं।

इन बच्चों में नैतिक मूल्य बढ़ाने के लिए आप कुछ सरल और प्रभावशाली पद्यों का उपयोग कर सकते हैं। ये पद्य बच्चों को नैतिकता, ईमानदारी, और परोपकार जैसे मूल्यों को समझाने और आत्मसात करने में मदद करेंगे।

#### 1. ईमानदारी का मूल्य:

*ईमानदारी सबसे अच्छी नीति,*

*सच्चाई का हो जो बीज।*

*सदा उसी पर जग हँसता है,*

*जो रहता है झूठ की सेज।।*

*ईमानदार बने जो बच्चा,*

सच्चाई पर रखे भरोसा।  
जीवन में वह ऊँचा उठता,  
नहीं कभी वो राहें खोता।।

## 2. परोपकार का महत्व:

परोपकार की राह चले जो,  
सबसे प्रिय उसे जान।  
कभी किसी से बैर न करता,  
सबसे करता प्रेम महान।।

दूसरों की मदद करो तुम,  
रखो दिल में यही विचार।  
जीवन में तुम सुखी रहोगे,  
सदा मिलेगा तुम्हें प्यार।।

## 3. सच्चाई और सादगी:

सच बोलो और सादगी अपनाओ,  
दिल में रखो सदा प्रभु का नाम।  
जीवन की राहें होंगी आसान,  
सच की राह चले हर इंसान।।

झूठ का सहारा मत लेना,  
सच का साथ सदा तुम देना।  
सादगी में है असली आनंद,  
इसी में बसता है जीवन का चंद।।

#### 4. मेहनत और धैर्य:

मेहनत से जो नाता जोड़े,

धैर्य धरे जो मन में सदा।

सफल वही जीवन में होता,

पाता है वह मंजिल ज्यों तारा।।

धैर्य धरो और मेहनत करो,

मन में विश्वास सदा रखो।

जीवन की मुश्किल राहों में,

आगे बढ़ते तुम सदा रहो।।

इन पद्यों का उपयोग बच्चों को नैतिक शिक्षा देने के लिए किया जा सकता है। इन्हें स्कूल की प्रार्थना सभा में या कक्षा के भीतर नैतिक शिक्षा के हिस्से के रूप में भी शामिल किया जा सकता है। नैतिक मूल्यों के माध्यम से, बच्चे मानसिक रूप से मजबूत और स्थिर बन सकते हैं, और छोटी बातों पर क्रोधित होने की प्रवृत्ति को कम कर सकते हैं। नैतिक शिक्षा बच्चों को सही दिशा में मार्गदर्शन देती है, जिससे वे अ"अब की विद्या व्यवस्था में नैतिक मूल्य कैसे जागृत किए जाएं?" इस सवाल का उत्तर देने के लिए, हमें भारतीय शिक्षा प्रणाली के वर्तमान परिदृश्य और नैतिक शिक्षा के महत्व को समझना होगा। यहाँ कुछ उपाय दिए गए हैं जो नैतिक मूल्यों को जागृत करने में मदद कर सकते हैं।

#### ■ अध्यापन में नैतिक शिक्षा का समावेश:

- पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को शामिल करना चाहिए, जिससे छात्र जीवन के नैतिक और आदर्श पहलुओं को समझ सकें।
- आदर्श शिक्षकों का चयन और प्रशिक्षण: शिक्षकों को नैतिक मूल्यों के महत्व के बारे में जागरूक करना और उन्हें प्रशिक्षित करना, ताकि वे खुद एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत कर सकें।
- शालेय गतिविधियाँ और कार्यक्रम: स्कूलों में नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करने वाले विभिन्न कार्यक्रम और गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं, जैसे वाद-विवाद, निबंध प्रतियोगिताएँ, और रोल-प्ले।

#### ■ मूल्य आधारित शिक्षा की पद्धतियाँ:

- शिक्षण पद्धतियों में ऐसे उदाहरण और केस स्टडीज़ शामिल की जा सकती हैं जो नैतिक निर्णय और आदर्श व्यवहार पर ध्यान केंद्रित करती हैं।
- अभिभावकों और समुदाय की भागीदारी: नैतिक शिक्षा को स्कूल से बाहर भी प्रोत्साहित करने के लिए अभिभावकों और स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी जरूरी है।

- संवेदनशीलता और सहानुभूति का विकास: छात्रों में सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी का विकास करना, जिससे वे दूसरों के प्रति समझदारी और संवेदनशीलता महसूस कर सकें।

#### ■ **प्रेरणादायक साहित्य और कहानियाँ:**

- नैतिक मूल्यों पर आधारित प्रेरणादायक साहित्य और कहानियों का अध्ययन कराना, जो जीवन की वास्तविकताओं और नैतिक दुविधाओं को प्रस्तुत करें।

इन उपायों को लागू करके, विद्या व्यवस्था में नैतिक मूल्यों को जागृत किया जा सकता है और छात्रों को एक नैतिक और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

#### ■ **गृह माहौल में नैतिक मूल्यों को अपनाने के उपाय:**

गृह और सामाजिक माहौल को संतुलित करते हुए नैतिक मूल्यों को अपनाने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं।

मूल्य आधारित शिक्षा: परिवार के सदस्यों के बीच नैतिक शिक्षा को प्रोत्साहित करें। बच्चों को आदर्श कहानियाँ सुनाएँ, जो नैतिकता और ईमानदारी के महत्व को दर्शाती हों।

उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करें: माता-पिता और अन्य परिवार के सदस्य खुद नैतिक मूल्यों का पालन करें। उदाहरण के लिए, ईमानदारी, सहानुभूति, और दया के कार्य दिखाएँ।

खुली बातचीत: नैतिक मुद्दों और समस्याओं पर परिवार के सदस्यों के साथ खुली चर्चा करें। बच्चों को सवाल पूछने और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।

सकारात्मक व्यवहार का सम्मान: नैतिक व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए सराहना और पुरस्कार का उपयोग करें। जब बच्चे अच्छे नैतिक निर्णय लेते हैं, तो उनकी प्रशंसा करें।

अनुशासन और नियम: परिवार में स्पष्ट और उचित नियम बनाएं, जो नैतिक और आदर्श व्यवहार को प्रोत्साहित करें। नियमों का पालन करने से नैतिकता की भावना को बढ़ावा मिलता है।

#### ■ **सामाजिक माहौल में नैतिक मूल्यों को अपनाने के उपाय:**

- समाज में योगदान: सामाजिक कार्यों में भाग लें, जैसे कि स्वच्छता अभियान, वृद्धाश्रम या अनाथालय में सहायता। यह बच्चों को सामाजिक जिम्मेदारी का एहसास कराता है।
- समाज में आदर्श व्यवहार: सामाजिक स्थिति और कार्यों में नैतिकता और ईमानदारी का पालन करें। उदाहरण के लिए, सच्चाई और निष्पक्षता का पालन करें, और दूसरों के प्रति सम्मान दिखाएँ।
- सकारात्मक समूह बनाना: समाज में ऐसे समूहों और संगठनों में शामिल हों जो नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देते हैं। उदाहरण के लिए, नैतिक शिक्षा पर आधारित क्लब या समूह।
- सहयोग और समर्थन: समाज में सहयोग और समर्थन की भावना को प्रोत्साहित करें। उदाहरण के लिए, पड़ोसियों की मदद करें और सामूहिक गतिविधियों में भाग लें।
- समाज के साथ जुड़ाव: स्थानीय समुदाय के साथ जुड़ाव और संवाद बनाए रखें। सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करें और नैतिक मूल्यों को साझा करें।



इन उपायों को अपनाकर, घर और समाज में नैतिक मूल्यों को प्रभावी ढंग से अपनाने और प्रोत्साहित करने में सफल हो सकते हैं।

- एक शिक्षक कक्षा और विद्यालय के स्तर पर छात्रों के व्यवहार में कई महत्वपूर्ण बदलाव ला सकता है। यहाँ कुछ प्रभावी तरीके दिए गए हैं जिनसे शिक्षक सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं:

#### 1. प्रेरणादायक नेतृत्व:

स्वयं आदर्श उदाहरण बनें: शिक्षक को खुद नैतिकता, ईमानदारी, और अनुशासन का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए।

सकारात्मक दृष्टिकोण: छात्रों के साथ सकारात्मक और प्रेरणादायक दृष्टिकोण अपनाएँ, जिससे वे प्रेरित और उत्साहित महसूस करें।

#### 2. सुसंगठित कक्षा प्रबंधन:

स्पष्ट नियम और अपेक्षाएँ: कक्षा में स्पष्ट नियम और अपेक्षाएँ स्थापित करें और उन्हें नियमित रूप से दोहराएँ।

अनुशासन और पुरस्कार: उचित व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कार प्रणाली का उपयोग करें और अनुशासनहीनता के मामले में उचित प्रतिक्रिया दें।

#### 3. सकारात्मक वातावरण बनाना:

सहमति और सहयोग: छात्रों को आपस में सहयोग और सामंजस्यपूर्ण व्यवहार की दिशा में प्रोत्साहित करें।

भावनात्मक समर्थन: छात्रों की भावनात्मक ज़रूरतों को समझें और उन्हें समर्थन प्रदान करें, जिससे वे आत्म-संयम और सहानुभूति का विकास कर सकें।

#### 4. व्यक्तिगत ध्यान और मार्गदर्शन:

व्यक्तिगत परामर्श: छात्रों के व्यक्तिगत समस्याओं और ज़रूरतों को समझने के लिए व्यक्तिगत परामर्श सत्र आयोजित करें।

विकासात्मक फीडबैक: छात्रों को नियमित रूप से उनके व्यवहार और प्रदर्शन पर विकासात्मक फीडबैक प्रदान करें।

#### 5. उत्साही और प्रेरणादायक शिक्षण विधियाँ:

इंटरैक्टिव शिक्षण: शिक्षण को इंटरैक्टिव और आनंददायक बनाएं, जिससे छात्रों की रुचि और संलग्नता बढ़े।

प्रोजेक्ट्स और ग्रुप वर्क: ग्रुप प्रोजेक्ट्स और टीम कार्य के माध्यम से सहयोग और साझा जिम्मेदारी का भावना पैदा करें।

#### 6. सामाजिक और नैतिक शिक्षा:

मूल्य आधारित शिक्षा: नैतिक और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करें, जैसे ईमानदारी, सहानुभूति, और जिम्मेदारी।

संवेदनशीलता पर कार्यशालाएँ: भावनात्मक और सामाजिक संवेदनशीलता पर कार्यशालाएँ और गतिविधियाँ आयोजित करें।

#### 7. अभिभावकों के साथ सहयोग:

अभिभावक-शिक्षक बैठकें: नियमित रूप से अभिभावक-शिक्षक बैठकें आयोजित करें और छात्रों के व्यवहार और प्रगति पर चर्चा करें।

घरेलू और स्कूल सहयोग: अभिभावकों के साथ मिलकर बच्चों के व्यवहार और शिक्षा में सहयोग करें।

इन तरीकों से शिक्षक कक्षा और विद्यालय के स्तर पर छात्रों के व्यवहार में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं और उन्हें एक अच्छा, जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

- अगर अभिभावक चाहते हैं कि उनका बेटा या बेटी स्कूल के माहौल से प्रभावित होकर नैतिक मूल्यों को अपनाए, तो उन्हें कुछ विशेष कदम उठाने की आवश्यकता होती है। यहाँ कुछ सुझाव दिए गए हैं जिनसे अभिभावक अपने बच्चों को नैतिक मूल्यों को अपनाने में मदद कर सकते हैं:

##### 1. सकारात्मक रोल मॉडल बनें:

आदर्श व्यवहार: खुद नैतिकता, ईमानदारी, और जिम्मेदारी का पालन करें। बच्चे अक्सर माता-पिता के व्यवहार से ही सीखते हैं।

सुसंगतता: अपने नैतिक मूल्यों को निरंतर बनाए रखें, ताकि बच्चे उन्हें समझ सकें और अपनाने की कोशिश करें।

##### 2. खुली और ईमानदार बातचीत:

संवेदनशील मुद्दों पर चर्चा: नैतिक मुद्दों, जैसे ईमानदारी, सहानुभूति, और जिम्मेदारी पर बच्चों से खुलकर बात करें।

सवालों के जवाब दें: बच्चे जब नैतिक मुद्दों पर सवाल पूछें, तो उन्हें सही और सरल जवाब दें।

##### 3. शिक्षा और गतिविधियाँ:

मूल्य आधारित किताबें: नैतिक शिक्षा पर आधारित किताबें और कहानियाँ पढ़ें, जो बच्चों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा देती हैं।

सकारात्मक गतिविधियाँ: समाज सेवा, स्वच्छता अभियानों या अन्य सकारात्मक गतिविधियों में बच्चे को शामिल करें, जिससे वे सामाजिक जिम्मेदारी का एहसास कर सकें।

##### 4. समय और ध्यान:

सुनना और समझना: बच्चों की समस्याओं और भावनाओं को सुनें और उन्हें समझने का प्रयास करें। इससे वे आपको अपना समर्थन और मार्गदर्शन मानेंगे।

गुणात्मक समय बिताना: परिवार के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताएं, जैसे कि चर्चा, खेल, या सांस्कृतिक गतिविधियाँ, जो बच्चों को नैतिक मूल्यों के प्रति संवेदनशील बनाते हैं।

#### 5. प्रोत्साहन और सराहना:

अच्छे व्यवहार को मान्यता: जब बच्चा अच्छा नैतिक व्यवहार दिखाए, तो उसकी सराहना करें और उसे प्रोत्साहित करें।

पुरस्कार और प्रशंसा: नैतिकता के अच्छे उदाहरणों और प्रयासों के लिए पुरस्कार या प्रशंसा का उपयोग करें।

#### 6. संघर्ष और समाधान:

संघर्ष के दौरान मार्गदर्शन: जब बच्चे नैतिक दilemmas का सामना करें, तो उन्हें सही निर्णय लेने में मार्गदर्शन करें।

सहायता और समर्थन: बच्चों को नैतिक संघर्षों से निपटने के लिए भावनात्मक और मानसिक समर्थन प्रदान करें।

#### 7. समाजिक वातावरण में शामिल होना:

समाज में सक्रियता: बच्चों को स्थानीय सामाजिक समूहों या क्लबों में शामिल करें, जो नैतिक और सामाजिक मूल्यों को प्रोत्साहित करते हैं।

सकारात्मक मित्रता: बच्चों के दोस्तों की सकारात्मक और नैतिक प्रभाव वाले समूहों में भागीदारी सुनिश्चित करें।

इन उपायों को अपनाकर, अभिभावक अपने बच्चों को नैतिक मूल्यों को अपनाने में मदद कर सकते हैं और उन्हें एक अच्छा जीवन जीने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

- वेदों और पुराणों में शिक्षा के माध्यम से नैतिक मूल्यों के विकास पर विशेष बल दिया गया है। इनमें कई श्लोक और कविताएँ हैं जो नैतिकता, धर्म, सत्य, और परोपकार के महत्व को रेखांकित करते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख उदाहरण दिए जा रहे हैं:

##### 1. ऋग्वेद (Rigveda) के अनुसार:

*सत्यम् वद, धर्मम् चर।*

*स्वाध्यायान्मा प्रमदः।*

**संदर्भ:** इस ऋग्वेदिक श्लोक का अर्थ है "सत्य बोलो, धर्म का पालन करो और आत्म-अध्ययन में आलस्य मत करो।" यह श्लोक नैतिकता और धार्मिकता के महत्व को रेखांकित करता है, जो शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य है।

##### 2. महाभारत के अनुसार:

*विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।*

*पात्रत्वाद् धनमाप्नोति, धनात् धर्मं ततः सुखम्॥*

**संदर्भ:** इस श्लोक का अर्थ है "विद्या विनम्रता देती है, विनम्रता से पात्रता मिलती है, पात्रता से धन, और धन से धर्म और सुख प्राप्त होता है।" यह श्लोक शिक्षा के माध्यम से नैतिकता और सफलता के संबंध को दर्शाता है।

*3. भगवद गीता (Bhagavad Gita) के अनुसार :*

*कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।*

*मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि॥*

**संदर्भ:** इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को कर्म करने और उसके फल की चिंता न करने का उपदेश देते हैं। यह शिक्षा का महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य है, जिसमें अपने कर्तव्यों का पालन और उसके परिणाम की चिंता न करना सिखाया जाता है।

*4. मनुस्मृति (Manusmriti) के अनुसार :*

*अहिंसा परमो धर्मः, धर्मं हिंसा तथैव च।*

**संदर्भ:** इस श्लोक में अहिंसा को सबसे बड़ा धर्म बताया गया है। शिक्षा में नैतिक मूल्यों के रूप में अहिंसा और दया के महत्व पर बल दिया जाता है, जो समाज के सामंजस्यपूर्ण विकास के लिए आवश्यक हैं।

*5. रामायण के अनुसार :*

*गोस्वामी तुलसीदास जी:*

*धर्म ते बिरति जो सुलभ होई।*

*जासु बिचार परम गति होई॥*

**संदर्भ:** इस दोहे में तुलसीदास जी ने धर्म और वैराग्य के महत्व को बताया है। शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्राप्त करना नहीं, बल्कि नैतिकता, धर्म और वैराग्य जैसे गुणों को आत्मसात करना भी है।

*6. अथर्ववेद (Atharvaveda) के अनुसार :*

*शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वयमा।*

*शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुक्रमः॥*

**संदर्भ:** इस श्लोक का अर्थ है "हमारे मित्र, वरुण, अर्यमा, इंद्र, बृहस्पति, और विष्णु हम पर शुभ आशीर्वाद बरसाएं।" यह श्लोक सद्भाव, मित्रता, और नैतिक मूल्यों के महत्व को दर्शाता है, जो शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य है।

इन श्लोकों और दोहों के माध्यम से वेदों और पुराणों में नैतिक शिक्षा के महत्व को बहुत उच्च स्थान दिया गया है। ये शिक्षाएँ विद्यार्थियों के नैतिक विकास में सहायक होती हैं और उन्हें एक जिम्मेदार और सदाचारी नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करती हैं।

- शिक्षा में नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने के लिए छात्रों का पात्र (योग्य होना) होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास तभी संभव है जब वे इन मूल्यों को समझने, आत्मसात करने और अपने जीवन में लागू करने के लिए तैयार हों। इस संदर्भ में, छात्रों का पात्र निम्नलिखित गुणों के आधार पर माना जा सकता है:

### **शिक्षा में नैतिक मूल्य ग्रहण करने में छात्रों/विद्यार्थियों की भूमिका :**

#### **1. सच्चाई और ईमानदारी (Honesty and Integrity):**

छात्रों को सच्चाई और ईमानदारी का महत्व समझना चाहिए। वे अपने कार्यों में, चाहे वह पढ़ाई हो या दैनिक जीवन, सच्चे और ईमानदार बने रहें।

उदाहरण: परीक्षा में नकल न करना, अपने दोस्तों और शिक्षकों से ईमानदारी से पेश आना।

#### **2. अनुशासन (Discipline):**

नैतिक मूल्यों को ग्रहण करने के लिए अनुशासन अत्यंत आवश्यक है। अनुशासन से छात्र अपने कार्यों और समय का सही ढंग से प्रबंधन कर सकते हैं और जीवन में नैतिकता का पालन कर सकते हैं।

उदाहरण: समय पर स्कूल आना, घर के कार्य को समय पर पूरा करना।

#### **3. सम्मान और आदर (Respect and Reverence):**

छात्रों को अपने माता-पिता, शिक्षकों, और बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करना आना चाहिए। यह नैतिकता के मूल सिद्धांतों में से एक है।

उदाहरण: शिक्षक और माता-पिता की बातों को ध्यान से सुनना और उनका पालन करना।

#### **4. सहानुभूति और करुणा (Empathy and Compassion):**

छात्रों में दूसरों के प्रति सहानुभूति और करुणा का भाव होना चाहिए। यह गुण उन्हें समाज में एक अच्छा और समझदार नागरिक बनने में मदद करता है।

उदाहरण: अपने साथियों की समस्याओं को समझना और उनकी मदद करना।

#### **5. कर्तव्यपरायणता (Sense of Responsibility):**

छात्रों को अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक और जिम्मेदार होना चाहिए। यह गुण उन्हें समाज और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने और निभाने में सक्षम बनाता है।

उदाहरण: पढ़ाई में ध्यान देना, घर और स्कूल के नियमों का पालन करना।

#### **6. धैर्य और सहनशीलता (Patience and Tolerance):**

छात्रों में धैर्य और सहनशीलता के गुणों का होना आवश्यक है। ये गुण उन्हें जीवन की कठिनाइयों का सामना करने और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने में मदद करते हैं।

उदाहरण: किसी कठिन प्रश्न को हल करते समय धैर्य रखना, अपने साथियों के प्रति सहनशील होना।

#### 7. स्व-अध्ययन और आत्म-विकास (Self-Study and Self-Development):

नैतिक मूल्यों को समझने और अपनाने के लिए छात्रों को आत्म-अध्ययन की आदत डालनी चाहिए। यह उन्हें अपने आंतरिक गुणों का विकास करने और सही मार्ग पर चलने में मदद करता है।

उदाहरण: अच्छी किताबें पढ़ना, स्व-अनुशासन में रहना।

- शिक्षा में नैतिक मूल्यों को ग्रहण करने के लिए छात्रों को इन गुणों का विकास करना आवश्यक है। जब छात्र इन गुणों को अपने जीवन में आत्मसात करते हैं, तो वे न केवल अच्छे विद्यार्थी बनते हैं, बल्कि समाज के लिए जिम्मेदार नागरिक भी बनते हैं। शिक्षकों और अभिभावकों की भी यह जिम्मेदारी होती है कि वे इन गुणों को बच्चों में विकसित करने का प्रयास करें। वर्तमान परिस्थितियों में, छात्रों के अध्ययन में कुछ बदलाव किए जा सकते हैं जो उनके नैतिक गुणों के विकास में सहायक हो सकते हैं। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए हैं:

प्रस्तुत परिस्थितियों में छात्रों के अध्ययन शैली में बदलाव लाने के लिए पाठ्यक्रम और छात्रों की भूमिका :

#### 1. समग्र शिक्षा (Holistic Education):

शिक्षा का उद्देश्य केवल शैक्षणिक ज्ञान देना नहीं होना चाहिए, बल्कि नैतिक, सामाजिक, और भावनात्मक विकास को भी शामिल करना चाहिए। पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा, समाजशास्त्र, और जीवन कौशल जैसे विषयों को शामिल किया जाना चाहिए, जो छात्रों को सही और गलत का भेद सिखाते हैं।

#### 2. मूल्य आधारित शिक्षा (Value-Based Education):

स्कूलों में नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षण कार्यक्रम लागू किए जाने चाहिए, जहाँ छात्रों को सच्चाई, ईमानदारी, सहिष्णुता, और परोपकार जैसे मूल्यों का महत्व सिखाया जाए। यह शिक्षा दैनिक जीवन की स्थितियों में नैतिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित करेगी।

#### 3. समूह चर्चा और नैतिक कहानियाँ (Group Discussions and Moral Stories):

छात्रों के बीच समूह चर्चा आयोजित की जानी चाहिए, जहाँ नैतिक समस्याओं पर विचार-विमर्श किया जा सके। नैतिक कहानियों के माध्यम से उन्हें नैतिकता और उनके परिणामों के बारे में जागरूक किया जा सकता है।

उदाहरण: पंचतंत्र की कहानियाँ, महाभारत और रामायण के प्रसंगों को पढ़ाना और उन पर चर्चा करना।

#### 4. अनुभव आधारित शिक्षा (Experiential Learning):

नैतिक मूल्यों को सिखाने के लिए छात्रों को वास्तविक जीवन के अनुभव प्रदान करना चाहिए। सामुदायिक सेवा, स्वच्छता अभियान, और सामाजिक कार्यों में भागीदारी छात्रों को नैतिकता के प्रति जागरूक बनाएगी।

उदाहरण: वृद्धाश्रम या अनाथालयों का दौरा, पर्यावरण संरक्षण अभियानों में भागीदारी।

## **5. भूमिका निभाना और नाट्य कला (Role Play and Dramatization):**

नैतिक गुणों को समझाने के लिए छात्रों को भूमिका निभाने और नाट्य कला के माध्यम से सीखने के अवसर प्रदान किए जा सकते हैं। यह उन्हें विभिन्न नैतिक परिस्थितियों में स्वयं को रखने और नैतिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने में मदद करेगा।

## **6. शिक्षक और अभिभावक का अनुकरणीय आचरण (Teacher and Parent Role Models):**

छात्रों के जीवन में शिक्षक और अभिभावक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे जो आचरण प्रदर्शित करते हैं, उसका प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। इसलिए, शिक्षकों और अभिभावकों को स्वयं नैतिक गुणों का पालन करना चाहिए और अपने कार्यों के माध्यम से बच्चों को प्रेरित करना चाहिए।

## **7. अनुशासन और नियमों का पालन (Discipline and Adherence to Rules):**

स्कूल में अनुशासन और नियमों का पालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। छात्रों को अनुशासन सिखाने के लिए उन्हें समय प्रबंधन, कर्तव्यपालन, और सही आचरण के महत्व को समझाना चाहिए। अनुशासन उन्हें एक अनुशासित और जिम्मेदार नागरिक बनने में मदद करेगा।

## **8. आध्यात्मिक और योग शिक्षा (Spiritual and Yoga Education):**

छात्रों में मानसिक और भावनात्मक स्थिरता लाने के लिए योग और ध्यान को शिक्षा का हिस्सा बनाया जा सकता है। इससे उनमें शांति, सहिष्णुता, और आत्म-नियंत्रण जैसे गुणों का विकास होगा।

उदाहरण: दैनिक योग अभ्यास, ध्यान सत्र, और आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा।

## **9. नैतिकता पर आधारित प्रोजेक्ट कार्य (Moral-Based Projects):**

छात्रों को नैतिक विषयों पर प्रोजेक्ट कार्य दिए जा सकते हैं, जैसे कि सत्यनिष्ठा, सहिष्णुता, और परोपकार पर आधारित परियोजनाएँ। यह उन्हें इन विषयों पर गहराई से सोचने और उन्हें अपने जीवन में लागू करने की प्रेरणा देगा।

## **10. सकारात्मक वातावरण का निर्माण (Creating a Positive Environment):**

स्कूल और घर दोनों जगह सकारात्मक वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिए, जहाँ नैतिकता और मूल्यों की सराहना की जाए। छात्रों को अपने विचार साझा करने और नैतिक निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

इन बदलावों के माध्यम से छात्रों में नैतिक गुणों का विकास किया जा सकता है। इन प्रयासों से न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन में सुधार होगा, बल्कि वे समाज के लिए जिम्मेदार नागरिक भी बन सकेंगे। छात्रों के नैतिक विकास और मानवीय मूल्यों के प्रत्यक्ष उदाहरण उन्हें सही दिशा में प्रेरित करने और उनके चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नीचे कुछ ऐसे उदाहरण दिए गए हैं जो छात्रों में नैतिकता और मानवीय मूल्यों को स्थापित करने में सहायक हो सकते हैं:

## ■ छात्रों के नैतिक विकास और मानवीय मूल्यों के प्रत्यक्ष उदाहरण :

### 1. सत्यनिष्ठा (Honesty):

उदाहरण: एक छात्र ने परीक्षा में नकल न करके अपने प्रयास से उत्तीर्ण होने का संकल्प लिया। परीक्षा में कुछ प्रश्न कठिन होने के बावजूद उसने ईमानदारी का दामन नहीं छोड़ा और जो भी परिणाम आया, उसे स्वीकार किया। यह सत्यनिष्ठा का आदर्श उदाहरण है।

### 2. परोपकार (Compassion):

उदाहरण: एक छात्र ने देखा कि उसके स्कूल के पास एक वृद्ध व्यक्ति अक्सर भूखा रहता है। उसने अपने दोस्तों के साथ मिलकर उस वृद्ध व्यक्ति को भोजन पहुँचाने का प्रबंध किया और नियमित रूप से उसकी देखभाल करना शुरू किया। यह परोपकार का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

### 3. कर्तव्यपरायणता (Responsibility):

उदाहरण: एक छात्र अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल करने और उनके गृहकार्य में मदद करने की जिम्मेदारी लेता है, ताकि वे भी अपनी पढ़ाई में अच्छा कर सकें। वह न केवल अपने कार्यों को जिम्मेदारी से निभाता है, बल्कि परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों को भी समझता है।

### 4. समानता और सहिष्णुता (Equality and Tolerance):

उदाहरण: कक्षा में एक नया छात्र आता है जो अन्य छात्रों से अलग धर्म या जाति का है। कक्षा के छात्र उसे अपनाते हैं, उसके साथ समानता का व्यवहार करते हैं और उसे अपने समूह में शामिल करते हैं। यह समानता और सहिष्णुता का एक उदाहरण है।

### 5. पर्यावरण संरक्षण (Environmental Protection):

उदाहरण: छात्रों के एक समूह ने स्कूल परिसर में पौधे लगाने का अभियान चलाया। उन्होंने न केवल पौधे लगाए बल्कि उनके संरक्षण के लिए नियमित रूप से पानी देना और देखभाल करना भी सुनिश्चित किया। यह पर्यावरण के प्रति उनके उत्तरदायित्व और संरक्षण की भावना का प्रतीक है।

### 6. सहयोग और साझेदारी (Cooperation and Teamwork):

उदाहरण: एक परियोजना के दौरान, कुछ छात्र एक साथ काम करते हैं। हालांकि उनके विचारों में भिन्नता होती है, लेकिन वे एक-दूसरे की राय का सम्मान करते हैं और मिलकर काम को सफलतापूर्वक पूरा करते हैं। यह सहयोग और साझेदारी का उत्कृष्ट उदाहरण है।

### 7. अहिंसा (Non-violence):

उदाहरण: एक छात्र को उसके साथी ने अपमानित किया, लेकिन उसने पलटकर हिंसा का रास्ता नहीं अपनाया। उसने शांति से स्थिति को संभाला और अपने शिक्षकों को इस बारे में बताया, जिससे समस्या का समाधान हुआ। यह अहिंसा के सिद्धांत पर चलने का उदाहरण है।

### 8. नैतिक साहस (Moral Courage):

उदाहरण: एक छात्र ने देखा कि उसके दोस्त किसी अन्य साथी का मजाक उड़ा रहे हैं। उसने साहस दिखाया और अपने दोस्तों से कहा कि यह गलत है, और उन्हें ऐसा करने से रोका। यह नैतिक साहस का प्रत्यक्ष उदाहरण है।



## 9. संवेदनशीलता (Empathy):

उदाहरण: एक छात्र ने देखा कि उसका सहपाठी किसी व्यक्तिगत कारण से उदास है। उसने उस सहपाठी से बातचीत की, उसकी समस्याओं को समझा, और उसे सहारा देने की कोशिश की। यह संवेदनशीलता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

## 10. स्व-अनुशासन (Self-discipline):

उदाहरण: एक छात्र ने खुद को एक लक्ष्य निर्धारित किया कि वह प्रतिदिन एक घंटा अपनी पढ़ाई के लिए समर्पित करेगा, चाहे जो भी हो। उसने नियमित रूप से इस अनुशासन का पालन किया और अपने प्रदर्शन में सुधार किया। यह स्व-अनुशासन का उदाहरण है।

इन उदाहरणों के माध्यम से छात्र अपने दैनिक जीवन में नैतिकता और मानवीय मूल्यों का अभ्यास कर सकते हैं। ऐसे मूल्य उन्हें न केवल अच्छे नागरिक बनने में मदद करेंगे, बल्कि उनके जीवन को सार्थक और समाजोपयोगी भी बनाएंगे।

## • छात्रों के मानव मूल्यों को साधने में सामाजिक माध्यमों का प्रभाव:

सामाजिक माध्यम, यानी सोशल मीडिया, आजकल छात्रों के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है, लेकिन यह अक्सर उनके मानव मूल्यों को साधने में समस्याओं का कारण भी बन सकता है। इसके पीछे कुछ प्रमुख कारण हैं:

**व्यर्थ समय व्यय:** सोशल मीडिया पर अधिक समय बिताने से छात्र अपनी पढ़ाई और व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक समय नहीं दे पाते। इससे उनका ध्यान अपने वास्तविक लक्ष्यों से भटक जाता है।

**तुलनात्मक मानसिकता:** सोशल मीडिया पर अन्य लोगों के जीवन और सफलता को देखकर छात्र अपने आप को उनसे कमतर समझने लगते हैं। इस तुलना के कारण उनका आत्मविश्वास कम हो जाता है और वे अपने मूल्यों और आदर्शों को भूलने लगते हैं।

**असली संबंधों में कमी:** सामाजिक माध्यम पर अधिक समय बिताने से छात्र अपने परिवार और मित्रों के साथ वास्तविक संबंध बनाने में असमर्थ हो जाते हैं। इससे उनके सामाजिक मूल्यों में कमी आ जाती है और वे संबंधों के महत्व को समझ नहीं पाते।

**गलत सूचना और प्रभाव:** सोशल मीडिया पर फैलने वाली गलत सूचनाएं और अफवाहें छात्रों के विचारों और मूल्यों को प्रभावित करती हैं। इसके कारण वे सही और गलत का अंतर समझने में असमर्थ हो जाते हैं, जो उनके व्यक्तित्व विकास में बाधा डालता है।

**मानसिक तनाव और तनाव भरी जीवन शैली:** सोशल मीडिया पर लगातार दूसरों के जीवन से अपनी तुलना करने के चक्कर में छात्र मानसिक तनाव और असुरक्षा का शिकार हो जाते हैं। यह उनके मानव मूल्यों जैसे कि संतुलन, सुख और आत्म-सम्मान को प्रभावित करता है।

इन सभी कारणों के चलते, सामाजिक माध्यम छात्रों के मानव मूल्यों को साधने में विफल हो रहा है, जो उनके समग्र विकास के लिए हानिकारक है।

- शिक्षा में मानव मूल्यों को छात्रों के मन में बैठाने की आवश्यकता क्यों पड़ रही है, जबकि पहले बड़े बुजुर्गों से ये मूल्य स्वाभाविक रूप से मिलते थे, इसका उत्तर कुछ प्रमुख कारणों में छिपा है:

**समाज में बदलाव:** समय के साथ समाज में कई बदलाव आए हैं। पहले, परिवार और समाज के बीच गहरे संबंध होते थे और बड़े बुजुर्गों का प्रभाव अधिक होता था। आजकल, परिवारों की संरचना बदल गई है और डिजिटल युग के कारण समाज में अलग-अलग प्रभाव बढ़ गए हैं।

**तकनीकी और डिजिटल प्रभाव:** वर्तमान में, सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म का प्रभाव बहुत बढ़ गया है। इनका असर बच्चों की सोच और उनके मूल्यों पर पड़ रहा है, जो कभी पारंपरिक शिक्षा और परिवार से प्राप्त होते थे।

**पारंपरिक शिक्षा प्रणाली का बदलाव:** पहले की शिक्षा प्रणाली और पारंपरिक मूल्य शिक्षा के लिए जिम्मेदार थे। आज की शिक्षा प्रणाली ने अधिक तकनीकी और व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाया है, जिससे मानव मूल्यों पर कम ध्यान दिया जाता है।

**परिवारों की बढ़ती व्यस्तता:** आधुनिक जीवन की तेज़ रफ्तार और परिवारों की व्यस्तता ने बच्चों को पारंपरिक मूल्य देने के लिए समय नहीं दिया। बड़े बुजुर्गों की भूमिका भी कमज़ोर हुई है, जिससे यह शिक्षा अब पाठ्यक्रम के माध्यम से देने की आवश्यकता महसूस हो रही है।

**सामाजिक विविधता और वैश्वीकरण:** वैश्वीकरण और सामाजिक विविधता ने नए दृष्टिकोण और सांस्कृतिक प्रभाव लाए हैं। इससे पूर्व के मानवीय मूल्य एक समान नहीं रह गए हैं और विभिन्न मूल्यों का समावेश किया जा रहा है।

## • नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 में नैतिक मूल्य

इन कारणों से, शिक्षा में मानव मूल्यों को पाठ्यक्रम में शामिल करना पड़ रहा है ताकि छात्र इन मूल्यों को समझ सकें और अपने जीवन में लागू कर सकें। नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 में नैतिक मूल्यों को एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक कौशल के रूप में प्रमुख स्थान दिया गया है। यह नीति केवल अकादमिक ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि छात्रों के समग्र विकास पर बल देती है। नीति यह मानती है कि शिक्षा का उद्देश्य एक सम्पूर्ण और संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करना है, जिसमें नैतिक और सामाजिक मूल्यों का समावेश हो। नई शिक्षा नीति में नैतिक मूल्यों को निम्नलिखित रूप से महत्व दिया गया है:

### 1. समग्र विकास:

नई शिक्षा नीति छात्रों के बौद्धिक, भावनात्मक और नैतिक विकास पर ध्यान देती है। इसमें यह कहा गया है कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसके माध्यम से छात्रों में नैतिक मूल्यों जैसे ईमानदारी, करुणा, सहानुभूति और दूसरों के प्रति सम्मान की भावना विकसित होनी चाहिए।

### 2. मूल्य-आधारित शिक्षा:

नीति में शिक्षा को भारतीय संस्कृति, परंपराओं और नैतिक मूल्यों के आधार पर देने पर बल दिया गया है। इसका उद्देश्य छात्रों को सत्य, ईमानदारी, परिश्रम और सेवा जैसे नैतिक मूल्यों से अवगत कराना है, ताकि वे अच्छे नागरिक बन सकें और समाज में सकारात्मक योगदान दे सकें।

### 3. चरित्र निर्माण:

NEP 2020 में चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया गया है। छात्रों में नैतिक तर्क-वितर्क (moral reasoning), नैतिक निर्णय क्षमता और जिम्मेदारी की भावना विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम में ऐसे विषयों और गतिविधियों को शामिल करने की सिफारिश की गई है।

#### 4. भारतीय सांस्कृतिक और नैतिक धरोहर:

नीति के अनुसार, छात्रों को भारतीय ज्ञान परंपराओं और प्राचीन साहित्य से नैतिकता और मूल्य शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया जाना चाहिए। इसमें भारतीय संस्कृति की विविधता, सहिष्णुता, समावेशिता और शांति के साथ रहने के नैतिक आदर्शों पर जोर दिया गया है।

#### 5. सामाजिक जिम्मेदारी का विकास:

नैतिक शिक्षा का उद्देश्य छात्रों में सामाजिक जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न करना है। NEP छात्रों को पर्यावरण, समाज और देश के प्रति जिम्मेदार बनाना चाहती है, जिससे वे भविष्य में नैतिक और जिम्मेदार नागरिक बनें।

#### 6. सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के माध्यम से नैतिकता:

केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं, बल्कि सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के माध्यम से भी नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाएगी। इसमें योग, खेल, सामुदायिक सेवा और पर्यावरण संरक्षण जैसी गतिविधियाँ शामिल होंगी, जो छात्रों में टीमवर्क, ईमानदारी और अनुशासन जैसे नैतिक मूल्यों का विकास करेंगी।

#### 7. शिक्षक प्रशिक्षण में नैतिकता:

नीति में यह भी जोर दिया गया है कि शिक्षक नैतिक मूल्यों के अनुकरणीय उदाहरण हों। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नैतिक और सामाजिक मूल्यों को शामिल किया जाएगा, ताकि शिक्षक स्वयं छात्रों के लिए नैतिक आदर्श प्रस्तुत कर सकें और उन्हें सही मार्गदर्शन दे सकें।

#### 8. लचीला पाठ्यक्रम और परियोजना-आधारित शिक्षा:

नीति के अनुसार, लचीली शिक्षा विधियाँ छात्रों में रचनात्मकता, नवाचार और नैतिक सोच को बढ़ावा देंगी। परियोजना-आधारित शिक्षा से छात्रों को वास्तविक दुनिया की समस्याओं पर काम करने का अवसर मिलेगा, जिससे वे नैतिक तर्कशक्ति के आधार पर निर्णय लेना सीख सकेंगे।

#### 9. बहुविषयक शिक्षा पर जोर:

NEP 2020 में बहुविषयक शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है, जिसके तहत छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों जैसे नैतिकता, दर्शन और मानव मूल्यों का अध्ययन करने का अवसर मिलेगा, जो उनके नैतिक दृष्टिकोण को समृद्ध करेगा। नई शिक्षा नीति 2020 में नैतिक मूल्यों को शिक्षा का अहम हिस्सा माना गया है। यह नीति छात्रों के शैक्षिक, नैतिक और सामाजिक विकास पर केंद्रित है, ताकि वे न केवल अकादमिक रूप से, बल्कि नैतिक रूप से भी सशक्त बन सकें और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझ सकें।

- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (Children with Special Needs - CWSN) के लिए नैतिक मूल्य और मानवतावाद सिखाने का तरीका विशिष्ट और संवेदनशील होना चाहिए। ये बच्चे अपने शारीरिक, मानसिक या सामाजिक चुनौतियों के बावजूद, एक समान शिक्षा और नैतिक मूल्यों के हकदार हैं। शिक्षा में नैतिकता और मानवतावाद का समावेश इन बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निम्नलिखित तरीकों से इन्हें नैतिक मूल्यों और मानवतावाद की शिक्षा दी जा सकती है:

## 1. समावेशी शिक्षा (Inclusive Education):

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ एक ही कक्षा में पढ़ाकर समावेशी वातावरण तैयार किया जा सकता है। इससे वे समाज के प्रति समानता और एकता का मूल्य समझेंगे। जब वे सामान्य बच्चों के साथ सामाजिक रूप से घुल-मिलकर पढ़ेंगे, तो सह-अस्तित्व और समावेशिता के नैतिक मूल्य स्वतः विकसित होंगे।

## 2. उपयुक्त शिक्षण पद्धतियाँ

बच्चों की विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण विधियाँ अपनाई जानी चाहिए।

जैसे: सहायक तकनीक: ब्रेल, श्रवण यंत्र, और विशेष कंप्यूटर सॉफ्टवेयर का उपयोग करके उनके लिए पाठों को सुलभ बनाना।

व्यक्तिगत शिक्षण योजना (IEP): हर बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उनकी क्षमता के अनुसार नैतिक और सामाजिक शिक्षाएँ दी जानी चाहिए। इससे वे व्यक्तिगत रूप से मजबूत नैतिक आधार बना पाएंगे।

## 3. कहानियों और उदाहरणों का उपयोग:

नैतिक शिक्षा देने के लिए कहानियों और दृश्य-श्रव्य साधनों का उपयोग करना एक प्रभावी तरीका है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए सरल और रोचक कहानियों के माध्यम से:

ईमानदारी, सहयोग, प्यार, और सहानुभूति जैसी नैतिकताओं को सिखाया जा सकता है।

मानवता और एक-दूसरे की सहायता करने की कहानियों से मानवतावाद का संदेश दिया जा सकता है।

उदाहरण: नैतिक कहानियाँ, जैसे पंचतंत्र की कहानियाँ या महात्मा गांधी, मदर टेरेसा के जीवन से प्रेरक प्रसंग, बच्चों को नैतिकता और सेवा भावना सिखाने के लिए उपयोग की जा सकती हैं।

## 4. सकारात्मक दृष्टिकोण और सहानुभूति (Empathy and Positive Attitude):

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना नैतिक शिक्षा का प्रमुख हिस्सा है। शिक्षक और माता-पिता को इन बच्चों को यह सिखाना चाहिए कि किसी भी समस्या या कमी के बावजूद वे मूल्यवान हैं।

सहानुभूति: बच्चों को दूसरों के दर्द और कठिनाइयों को समझने की शिक्षा दी जानी चाहिए। इससे वे न केवल अपने, बल्कि दूसरों के प्रति भी दयालु बनेंगे।

सकारात्मक दृष्टिकोण: विशेष आवश्यकता वाले बच्चों में आत्म-विश्वास बढ़ाने के लिए उनकी हर छोटी सफलता की सराहना करनी चाहिए। इससे वे नैतिक और आत्म-सम्मान विकसित कर पाएंगे।

## 5. समाज सेवा और परोपकार:

मानवता और नैतिकता सिखाने के लिए बच्चों को समाज सेवा के कार्यों में शामिल किया जा सकता है। चाहे वह छोटे कार्यों में उनकी भागीदारी हो, जैसे पौधारोपण, स्वच्छता अभियान या किसी जरूरतमंद की मदद, इससे बच्चों में सहानुभूति, करुणा, और सेवा भावना विकसित होती है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को भी इस तरह के कार्यों में शामिल करना चाहिए ताकि वे समाज का एक अहम हिस्सा बन सकें।

## 6. सकारात्मक रोल मॉडल प्रस्तुत करना:

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को उन लोगों के उदाहरण देने चाहिए जिन्होंने अपनी कठिनाइयों के बावजूद समाज में बड़ा योगदान दिया हो। ऐसे व्यक्तियों की कहानियाँ बच्चों को प्रेरित करती हैं और उन्हें नैतिक मूल्यों का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

उदाहरण: हेलेन केलर का जीवन, जिन्होंने अपने शारीरिक कठिनाइयों को पार करके शिक्षा और मानव सेवा के क्षेत्र में महान कार्य किए।

## 7. मूल्यों की व्यावहारिक शिक्षा:

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए नैतिक शिक्षा केवल सिद्धांतों तक सीमित न हो, बल्कि व्यावहारिक रूप में दी जाए।

जैसे: समूह गतिविधियों के माध्यम से आपसी सहयोग, सद्भावना और सामूहिक निर्णय लेने की कला सिखाई जा सकती है।

रोल प्ले: बच्चों को विभिन्न नैतिक दुविधाओं में डालकर यह सिखाया जा सकता है कि सही और गलत में अंतर कैसे करें।

## 8. सकारात्मक सुदृढ़ीकरण (Positive Reinforcement):

जब भी बच्चे नैतिक आचरण करते हैं या मानवतावादी मूल्यों का पालन करते हैं, तो उनकी प्रशंसा करें और उन्हें प्रोत्साहित करें। इससे उनका नैतिक दृष्टिकोण और आत्म-विश्वास बढ़ेगा।

## 9. मूल्य-आधारित पाठ्यक्रम (Value-based Curriculum):

शिक्षा के पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा और मानवता से जुड़े विषयों को शामिल करना आवश्यक है। यह पाठ्यक्रम विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए सरल और व्यावहारिक हो, जिसमें नैतिक मूल्यों और मानवता का महत्व विशेष रूप से बताया जाए।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को नैतिकता और मानवतावाद सिखाने के लिए सहानुभूति, धैर्य, और सही शिक्षण विधियों की आवश्यकता होती है। इन बच्चों के साथ सम्मान और सहानुभूति के साथ पेश आकर उन्हें यह सिखाया जा सकता है कि हर व्यक्ति का समाज में स्थान महत्वपूर्ण है। नैतिक और मानवतावादी शिक्षा उन्हें आत्म-सम्मान और दूसरों के प्रति करुणा का भाव विकसित करने में मदद करती है, जिससे वे एक सफल और सशक्त व्यक्ति बन सकते हैं।

आनेवाले दिनों में स्ट्रेस, प्रेशर, डिप्रेशन, फ्रस्ट्रेशन दूर करने हेतु नैतिक शिक्षा, मानव मूल्य उपयोगी होंगे मनोविज्ञान के आधार पर निम्न बिन्दुओं पर आधारित होकर शिक्षा के सोपान अपनाना चाहिए।

आनेवाले दिनों में तनाव, दबाव, डिप्रेशन और फ्रस्ट्रेशन से निपटने के लिए नैतिक शिक्षा और मानव मूल्यों का अनुप्रयोग मनोविज्ञान के आधार पर अत्यंत उपयोगी हो सकता है। नैतिक शिक्षा और मानव मूल्य न केवल व्यक्ति के आंतरिक शांति को बढ़ावा देते हैं, बल्कि वे मानसिक स्वास्थ्य को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। यहां यह बताया गया है कि कैसे नैतिक शिक्षा और मानव मूल्य मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से उपयोगी हो सकते हैं:

### **1. स्वीकृति और आत्म-समर्पण (Acceptance and Self-Acceptance):**

मनोविज्ञान में आत्म-स्वीकृति महत्वपूर्ण है, और नैतिक शिक्षा में भी आत्म-स्वीकृति का महत्व है।

आत्म-स्वीकृति: जब व्यक्ति अपनी कमजोरियों और सीमाओं को स्वीकार करता है, तो वह आंतरिक शांति प्राप्त कर सकता है। नैतिक शिक्षा में आत्म-स्वीकृति को सिखाना व्यक्ति को अपनी वास्तविकता को स्वीकार करने और आत्म-संयम का अभ्यास करने में मदद करता है।

प्रेरणा: नैतिक शिक्षाएँ जैसे कि सत्यता और ईमानदारी व्यक्ति को अपनी समस्याओं को समझने और उनका सामना करने में मदद करती हैं, जिससे तनाव और दबाव कम होता है।

### **2. सहानुभूति और करुणा (Empathy and Compassion):**

सहानुभूति और करुणा मानसिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। नैतिक शिक्षा में इन मूल्यों का समावेश तनाव और फ्रस्ट्रेशन को कम करने में सहायक हो सकता है:

सहानुभूति: जब व्यक्ति दूसरों की भावनाओं और समस्याओं को समझता है, तो वह अपनी समस्याओं को कम महत्व दे सकता है और मानसिक शांति प्राप्त कर सकता है।

करुणा: दूसरों की मदद करने की भावना से व्यक्ति को आंतरिक संतोष मिलता है, जो मानसिक दबाव को कम करता है।

### **3. आत्म-नियंत्रण और संयम (Self-Control and Resilience):**

मनोविज्ञान में आत्म-नियंत्रण और संयम का महत्व है। नैतिक शिक्षा के द्वारा व्यक्ति आत्म-नियंत्रण और संयम का अभ्यास कर सकता है:

आत्म-नियंत्रण: नैतिक शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को अपनी इच्छाओं और भावनाओं को नियंत्रित करने की शिक्षा दी जाती है, जिससे तनाव और क्रोध कम होता है।

संयम: संयम और धैर्य का अभ्यास करने से व्यक्ति को अपनी समस्याओं का समाधान शांतिपूर्ण ढंग से करने की क्षमता मिलती है।

### **4. सकारात्मक सोच और आशावादिता (Positive Thinking and Optimism):**

सकारात्मक सोच और आशावादिता मानसिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। नैतिक शिक्षा में सकारात्मक सोच और आशावादिता को बढ़ावा देने वाले तत्व होते हैं:

सकारात्मक सोच: नैतिक शिक्षा में जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की सलाह दी जाती है, जिससे व्यक्ति अपने जीवन में चुनौतियों का सामना सकारात्मक रूप से कर सकता है।

आशावादिता: नैतिक मूल्यों के पालन से व्यक्ति को अपने लक्ष्यों के प्रति आशावादी दृष्टिकोण बनाए रखने में मदद मिलती है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

### **5. संबंधों में सुधार (Improving Relationships):**

नैतिक शिक्षा और मानव मूल्य संबंधों में सुधार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं:

संबंधों में सामंजस्य: नैतिक शिक्षा जैसे कि ईमानदारी, सहयोग, और दया के अभ्यास से व्यक्तिगत संबंधों में सुधार होता है। स्वस्थ संबंध मानसिक तनाव और फ्रस्ट्रेशन को कम कर सकते हैं।

संबंधों में सुधार: अच्छे रिश्ते तनाव कम करने में मदद करते हैं, और नैतिक मूल्यों के पालन से ये रिश्ते मजबूत होते हैं।

## **6. मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद (Psychological Realism):**

मनोविज्ञान के अनुसार, यथार्थवाद और सच्चाई को समझना मानसिक शांति के लिए आवश्यक है:

यथार्थवाद: नैतिक शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को यथार्थवाद और सत्यता की शिक्षा दी जाती है, जिससे वह अपनी समस्याओं का वास्तविक रूप से सामना कर सकता है।

सच्चाई: सच्चाई के प्रति ईमानदारी मानसिक शांति और आंतरिक संतोष को बढ़ावा देती है।

## **7. आत्म-संवेदनशीलता (Self-Awareness):**

आत्म-संवेदनशीलता मानसिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है:

आत्म-संवेदनशीलता: नैतिक शिक्षा व्यक्ति को आत्म-संवेदनशीलता के महत्व को समझने में मदद करती है, जिससे वह अपनी भावनाओं और प्रतिक्रियाओं को बेहतर ढंग से समझ सकता है।

## **8. अस्तित्ववादी दृष्टिकोण (Existential Perspective):**

अस्तित्ववाद के अनुसार, जीवन का उद्देश्य और अर्थ समझना मानसिक शांति में सहायक होता है:

अस्तित्ववादी दृष्टिकोण: नैतिक शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को जीवन के उद्देश्य और अर्थ को समझने में मदद मिलती है, जो मानसिक शांति को बढ़ावा देता है।

## **9. ध्यान और ध्यान (Mindfulness and Meditation):**

ध्यान और ध्यान मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायक होते हैं। नैतिक शिक्षा और मानव मूल्य इस प्रक्रिया को समर्थन प्रदान कर सकते हैं।

ध्यान: नैतिक शिक्षा में ध्यान और आत्म-विश्लेषण का महत्व बताया जाता है। नियमित ध्यान से व्यक्ति अपने विचारों और भावनाओं को नियंत्रित कर सकता है, जिससे तनाव और अवसाद कम होते हैं।

ध्यान की आदतें: नैतिकता के अंतर्गत आत्म-निरीक्षण और आत्म-समर्पण की आदतें विकसित करने से व्यक्ति मानसिक शांति प्राप्त कर सकता है।

## **10. आध्यात्मिकता और जीवन की दिशा (Spirituality and Life Direction):**

आध्यात्मिकता और जीवन की दिशा मानसिक स्वास्थ्य को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं:

आध्यात्मिकता: नैतिक शिक्षा में आध्यात्मिकता का स्थान महत्वपूर्ण है। आध्यात्मिक विचार और प्रथाएँ व्यक्ति को जीवन में संतुलन और शांति प्रदान करती हैं।

जीवन की दिशा: नैतिक शिक्षा व्यक्ति को जीवन के सही मार्ग पर चलने और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देती है, जिससे तनाव और अवसाद को कम किया जा सकता है।



- **नैतिक शिक्षा और मानव मूल्यों का प्रत्यक्ष प्रभाव:**

संतुलित मानसिकता: नैतिक शिक्षा और मानव मूल्य मानसिक संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैं। ये शिक्षाएँ व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों में भी शांत और संयमित रहने की प्रेरणा देती हैं।

स्वास्थ्यपूर्ण आदतें: नैतिक शिक्षा आत्म-देखभाल और स्वास्थ्यपूर्ण आदतों को प्रोत्साहित करती है, जो मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायक होती हैं।

सामाजिक समर्थन: मानव मूल्यों के आधार पर मजबूत सामाजिक संबंध बनाए जाते हैं, जो मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में सहायक होते हैं। अच्छे सामाजिक संबंध तनाव को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आनेवाले दिनों में तनाव, दबाव, डिप्रेशन, और फ्रस्ट्रेशन से निपटने के लिए नैतिक शिक्षा और मानव मूल्यों का उपयोग मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से बहुत प्रभावी हो सकता है। ये मूल्य व्यक्ति को मानसिक शांति, आत्म-स्वीकृति, सहानुभूति, आत्म-नियंत्रण, सकारात्मक सोच, और स्वास्थ्यपूर्ण आदतें अपनाने में मदद करते हैं। नैतिक शिक्षा और मानव मूल्य एक सशक्त मानसिक स्वास्थ्य की ओर बढ़ने के लिए आवश्यक आधार प्रदान करते हैं, जिससे जीवन में संतुलन और सुख-शांति प्राप्त की जा सकती है।

- भारतीय साहित्य और इतिहास दोनों ने हमेशा नैतिकता और मानवता के सिद्धांतों पर जोर दिया है। यह मूल्य न केवल व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करते हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण माने गए हैं।

### **भारतीय साहित्य तथा इतिहास में मानवता और नैतिक मूल्य:**

**1. जैन और बौद्ध साहित्य :** जैन और बौद्ध साहित्य ने अहिंसा, करुणा और सह-अस्तित्व के मूल्यों पर जोर दिया है। महावीर और गौतम बुद्ध ने सत्य, अहिंसा, और ध्यान के माध्यम से मानवता की सेवा करने का मार्ग दिखाया। बौद्ध धर्म में अष्टांगिक मार्ग और चार आर्य सत्य मानवता के मार्गदर्शन के लिए नैतिक सिद्धांत माने जाते हैं। जैन धर्म का आधार अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अचौर्य, और ब्रह्मचर्य जैसे नैतिक सिद्धांतों पर आधारित है। जैन साहित्य में इन नैतिक मूल्यों को गहराई से समझाया गया है, और व्यक्ति व समाज को आत्म-संयम और नैतिकता के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया गया है।

### **मुख्य मानव मूल्य:**

**अहिंसा (Non-violence):** जैन धर्म का सबसे प्रमुख सिद्धांत है। अहिंसा का अर्थ केवल शारीरिक हिंसा न करना ही नहीं, बल्कि मन, वचन और कर्म से किसी भी प्रकार का अहित न करना है। यह सभी जीवों के प्रति करुणा और सहानुभूति का प्रतीक है।

**सत्य (Truth):** सत्य को जीवन में सर्वोच्च स्थान दिया गया है। जैन धर्म के अनुसार, केवल वही व्यक्ति जो सत्य का पालन करता है, वह आत्मज्ञान प्राप्त कर सकता है।

**अपरिग्रह (Non-possessiveness):** यह सिद्धांत बताता है कि हमें संसारिक वस्तुओं के प्रति आसक्ति नहीं रखनी चाहिए। अपरिग्रह का पालन व्यक्ति को लालच और संग्रह की भावना से दूर रखता है।

**ब्रह्मचर्य (Celibacy):** जैन साहित्य में आत्मसंयम और ब्रह्मचर्य को उच्च नैतिक मूल्य माना गया है, जिससे मनुष्य अपनी इच्छाओं और लालच पर नियंत्रण कर सकता है।



**अचौर्य (Non-stealing):** चोरी न करना, किसी की वस्तु को बिना अनुमति के न लेना, और दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना जैन धर्म में नैतिकता का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

### प्रमुख जैन साहित्य:

**आचारांगसूत्र:** यह जैन धर्म का प्रमुख ग्रंथ है, जिसमें जैन मुनियों के लिए नैतिक आचरण और अनुशासन की शिक्षा दी गई है। इसमें अहिंसा और आत्मसंयम के महत्व को विस्तार से बताया गया है।

**तत्त्वार्थसूत्र:** इस ग्रंथ में जैन धर्म के नैतिक सिद्धांतों को सरल और व्यावहारिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इसमें जीवन के मूलभूत सिद्धांत और नैतिकता के आधार पर जीवन जीने की शिक्षा दी गई है।

## 2. बौद्ध साहित्य में मानव मूल्य और नैतिकता

बौद्ध धर्म में नैतिकता और मानवता का आधार गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग हैं। बौद्ध साहित्य करुणा, मैत्री, और शील (नैतिक आचरण) जैसे सिद्धांतों पर केंद्रित है, जो व्यक्ति को मानसिक शांति और समाज में शांति की स्थापना की ओर ले जाते हैं।

### मुख्य मानव मूल्य:

**अहिंसा (Non-violence):** बौद्ध धर्म भी अहिंसा के सिद्धांत पर आधारित है। बुद्ध ने कहा कि किसी भी जीव को कष्ट पहुंचाना नैतिकता के खिलाफ है।

**करुणा (Compassion):** बौद्ध साहित्य में करुणा को सर्वोच्च नैतिक मूल्य माना गया है। दूसरों के दुख को समझना और उनके कल्याण के लिए कार्य करना, करुणा का मुख्य उद्देश्य है।

**मैत्री (Loving-kindness):** मैत्री का अर्थ सभी प्राणियों के प्रति प्रेम और सद्भावना रखना है। यह मानवीय संबंधों और समाज में शांति की स्थापना के लिए आवश्यक है।

**शील (Moral conduct):** शील का अर्थ नैतिक आचरण से है। यह बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण अंग है, जिसमें सत्य, अहिंसा, चोरी न करना, गलत आचरण से बचना और नशीली चीजों का सेवन न करने जैसे नैतिक नियम शामिल हैं।

**सम्यक दृष्टि (Right view):** बौद्ध धर्म में सम्यक दृष्टि का अर्थ है जीवन को सही दृष्टिकोण से देखना और सत्य को समझना। यह नैतिकता और मानवता के लिए आवश्यक है, क्योंकि सही दृष्टिकोण से ही व्यक्ति नैतिक आचरण का पालन कर सकता है।

### प्रमुख बौद्ध साहित्य:

**धम्मपद:** यह बौद्ध धर्म का प्रमुख ग्रंथ है, जिसमें नैतिकता और जीवन के सही मार्ग पर चलने के लिए बुद्ध के उपदेशों का संग्रह है। इसमें करुणा, मैत्री, और अहिंसा के महत्व को विस्तार से समझाया गया है।

**त्रिपिटक:** बौद्ध धर्म का यह प्रमुख ग्रंथ तीन भागों में विभाजित है—विनय पिटक, सुत्त पिटक और अभिधम्म पिटक। इसमें बौद्ध मठों के नियम, नैतिक आचरण, और धर्म की शिक्षा दी गई है।

**जातक कथाएँ:** यह गौतम बुद्ध के पूर्व जन्मों की कहानियाँ हैं, जो नैतिकता और मानवता की शिक्षाओं से भरी हुई हैं। इन कहानियों के माध्यम से नैतिक मूल्यों को सरल तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

### 3. भक्ति और सूफी साहित्य

मध्यकालीन भारत में भक्ति और सूफी संतों ने मानवता और प्रेम के सिद्धांतों का प्रचार किया। कबीर, मीरा, और गुरु नानक जैसे संतों ने धार्मिक भेदभाव को छोड़कर मानवता की एकता का संदेश दिया। सूफी संतों ने प्रेम, शांति और ईश्वर की भक्ति के माध्यम से मानवता की सेवा की शिक्षा दी।<sup>1</sup> भक्ति साहित्य में मानव मूल्य और नैतिकता

भक्ति आंदोलन 7वीं से 17वीं सदी के बीच प्रमुख रूप से विकसित हुआ और इसने भारतीय समाज को गहराई से प्रभावित किया। इस आंदोलन के संतों ने धार्मिक अनुष्ठानों और पाखंड का विरोध करते हुए प्रेम, भक्ति और समानता पर आधारित एक सरल मार्ग दिखाया।

#### प्रमुख मानव मूल्य:

**समानता (Equality):** भक्ति आंदोलन ने जाति, धर्म, और वर्ग के भेदभाव को अस्वीकार किया। संतों का संदेश था कि ईश्वर की दृष्टि में सभी समान हैं, चाहे वह ब्राह्मण हो या शूद्र, अमीर हो या गरीब।

**प्रेम (Love):** भक्ति संतों ने प्रेम को ईश्वर से जुड़ने का सबसे सरल और सशक्त मार्ग बताया। उन्होंने कहा कि प्रेम ही वह माध्यम है, जिससे हम ईश्वर और समस्त प्राणियों के करीब आ सकते हैं।

**सहिष्णुता (Tolerance):** भक्ति साहित्य में धार्मिक सहिष्णुता का विशेष महत्व था। संतों ने सभी धर्मों को एक समान माना और ईश्वर की भक्ति के लिए किसी विशेष धार्मिक आचार-विचार को जरूरी नहीं समझा।

**करुणा (Compassion):** भक्ति संतों ने मानवता के प्रति करुणा और दया का संदेश दिया। उन्होंने दूसरों की सेवा और भलाई को जीवन का महत्वपूर्ण उद्देश्य बताया।

**नैतिक आचरण (Moral conduct):** भक्ति साहित्य में साधारण और नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा दी गई है। संतों ने आडंबर, दिखावा और अनैतिक कर्मों का विरोध किया और सच्चाई, सरलता और ईमानदारी को अपनाने की सलाह दी।

#### प्रमुख भक्ति संत और साहित्य:

**कबीर:** कबीर ने अपने दोहों के माध्यम से समाज में व्याप्त धार्मिक पाखंड और जातिवाद का विरोध किया। उनका संदेश सरल था कि ईश्वर की प्राप्ति किसी विशेष धार्मिक क्रिया से नहीं, बल्कि प्रेम और सत्य के मार्ग से होती है। उनका प्रसिद्ध कथन:

*"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।*

*ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।"*

यह कथन प्रेम और सच्चाई को सर्वोच्च मूल्य के रूप में प्रस्तुत करता है।

**मीरा बाई:** मीरा बाई का भक्ति साहित्य प्रेम और आत्मसमर्पण पर आधारित है। उन्होंने भगवान कृष्ण को अपना सर्वस्व मानते हुए समाज के बंधनों से मुक्ति प्राप्त की। उनका जीवन और साहित्य मानवता और प्रेम का संदेश देता है।

**तुलसीदास:** तुलसीदास ने "रामचरितमानस" के माध्यम से भगवान राम के जीवन को नैतिकता और मानवता के आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया। राम का जीवन आदर्श राजा, पुत्र, पति और मित्र के रूप में नैतिकता और धर्म का प्रतीक है।

#### 4. सूफी साहित्य में मानव मूल्य और नैतिकता:

सूफी आंदोलन इस्लाम की रहस्यवादी धारा है, जो 8वीं सदी में अरब में विकसित हुई और धीरे-धीरे भारत में भी प्रचलित हुई। सूफी संतों ने मानवता, प्रेम और आत्मिक ज्ञान को महत्वपूर्ण माना। उनके साहित्य में ईश्वर से मिलन का मार्ग प्रेम, संगीत और सेवा को माना गया है।

##### प्रमुख मानव मूल्य:

**ईश्वर प्रेम (Divine Love):** सूफी संतों का मानना था कि ईश्वर तक पहुंचने का सबसे सरल और सच्चा मार्ग प्रेम है। उन्होंने प्रेम को ईश्वर से जुड़ने का साधन माना और कहा कि जब मनुष्य प्रेम करता है, तो वह ईश्वर की निकटता में होता है।

**सहिष्णुता (Tolerance):** सूफी साहित्य ने धार्मिक सहिष्णुता और सभी धर्मों के प्रति आदर का संदेश दिया। सूफी संतों ने धार्मिक विभाजन को अस्वीकार किया और मानवता को प्राथमिकता दी।

**सेवा (Service):** सूफियों ने मानवता की सेवा को सबसे बड़ा धर्म माना। उन्होंने समाज में पीड़ितों, गरीबों और वंचितों की मदद की और परोपकार के कार्यों में जीवन बिताया।

**नैतिक शुद्धता (Moral Purity):** सूफी साहित्य ने आत्मिक और नैतिक शुद्धता पर जोर दिया। ईश्वर की प्राप्ति के लिए सूफियों ने मन को विकारों से मुक्त करने और नैतिक आचरण का पालन करने पर बल दिया।

**समर्पण (Surrender):** सूफी संतों ने स्वयं को ईश्वर की इच्छा में समर्पित करना सिखाया। उन्होंने कहा कि मनुष्य को अहंकार से मुक्त होकर ईश्वर की इच्छा को स्वीकार करना चाहिए।

##### प्रमुख सूफी संत और साहित्य:

**रूमी:** रूमी का सूफी काव्य प्रेम, समर्पण और आत्मज्ञान पर आधारित है। उनके साहित्य में प्रेम को मानवता और ईश्वर से जुड़ने का सबसे शक्तिशाली माध्यम माना गया है। उनका प्रसिद्ध कथन:

*"जिन्हें प्रेम से मार्गदर्शन मिला, वे कभी खो नहीं सकते।"*

यह कथन प्रेम की शक्ति और उसके माध्यम से आत्मिक शांति की प्राप्ति का संदेश देता है।

**बाबा बुल्ले शाह:** बाबा बुल्ले शाह का काव्य सामाजिक और धार्मिक बाधाओं के खिलाफ था। उन्होंने प्रेम और मानवता के माध्यम से ईश्वर की खोज का संदेश दिया। उनका प्रसिद्ध कथन:

*"बुल्ला की जाणां मैं कौन?"*

यह पंक्ति अहंकार और जाति-पाति के भेदभाव को नकारते हुए आत्मज्ञान की खोज की ओर प्रेरित करती है।

**ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती:** भारत के सबसे प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने मानवता, प्रेम, और सेवा के आदर्शों को अपनाया। उनका संदेश था:

*"सबकी सेवा करो, सबको प्रेम करो।"*

*यह कथन स्पष्ट रूप से मानवता और करुणा का संदेश देता है।*

आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी, खान-पान की आदतें, और जीवन शैली में तेजी से हो रहे बदलाव ने आने वाली पीढ़ी पर गहरा प्रभाव डाला है। ऐसे में, नई पीढ़ी में बड़े-बुजुर्गों के प्रति सम्मान, शिक्षा के प्रति समर्पण, और सनातन धर्म एवं संस्कृति के प्रति आदर को बनाए रखना एक चुनौती बन गया है। परंतु, यदि सही तरीके से शिक्षा प्रणाली में आवश्यक सुधार किए जाएं, तो इस दिशा में सकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं।

इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान दिया जा सकता है:

### 1. शिक्षा पाठ्यक्रम में नैतिक और सांस्कृतिक शिक्षा का समावेश:

शिक्षा प्रणाली में ऐसे पाठ्यक्रम को शामिल करना चाहिए, जो न केवल शैक्षणिक ज्ञान प्रदान करें, बल्कि छात्रों को नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों से भी अवगत कराएं। इसके लिए:

**नैतिक शिक्षा (Moral Education):** स्कूलों में नैतिकता पर आधारित विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए, जहां छात्रों को सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, ईमानदारी, और दया के मूल्यों को सिखाया जाए।

**संस्कृति और धर्म के प्रति जागरूकता (Cultural Awareness):** छात्रों को सनातन धर्म की परंपराओं, रीति-रिवाजों, और मूल्यों से अवगत कराया जाए। इसके लिए भारतीय शास्त्रों, महाकाव्यों (रामायण, महाभारत), और संतों की शिक्षाओं का अध्ययन अनिवार्य हो सकता है।

**योग और ध्यान (Yoga and Meditation):** छात्रों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए योग और ध्यान को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। इससे उनकी एकाग्रता और मानसिक शांति में वृद्धि होगी।

### 2. प्राचीन भारतीय ज्ञान का अध्ययन:

भारतीय शिक्षा प्रणाली में भारत के प्राचीन ज्ञान, वेद, उपनिषद, भगवद गीता, और अन्य शास्त्रों का समावेश किया जाना चाहिए। इससे छात्रों में अपने देश की समृद्ध संस्कृति और आध्यात्मिक धरोहर के प्रति गर्व और समझ पैदा होगी। इस दिशा में निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

**संस्कृत भाषा का अध्ययन:** संस्कृत भाषा के अध्ययन को प्रोत्साहित किया जाए, ताकि छात्र भारतीय शास्त्रों और धर्मग्रंथों को मूल रूप में पढ़ सकें और उनका गहन अध्ययन कर सकें।

**धर्म और दर्शन का अध्ययन:** भारतीय दर्शन और धर्म के विभिन्न पहलुओं, जैसे वेदांत, योग, कर्म, धर्म, और मोक्ष पर चर्चा और अध्ययन के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया जा सकता है।

### 3. अनुभव आधारित शिक्षा (Experiential Learning):

पारंपरिक शिक्षा के साथ-साथ अनुभव आधारित शिक्षा को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसके अंतर्गत:

**गुरुकुल पद्धति का पुनरुत्थान:** गुरुकुल जैसी शिक्षा प्रणाली, जहां शिक्षक और छात्रों के बीच आत्मीयता, सम्मान, और अनुशासन का वातावरण होता है, को बढ़ावा दिया जा सकता है। इस प्रणाली में छात्रों को सिर्फ ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन के वास्तविक सबक भी सिखाए जाते थे।

**सहशैक्षिक कार्यक्रम (Co-curricular Activities):** छात्रों को सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधियों, जैसे कथा-वाचन, भजन, सांस्कृतिक नाटक, और धार्मिक उत्सवों में भाग लेने का अवसर दिया जाए। इससे वे धर्म और संस्कृति के महत्व को आत्मसात कर सकेंगे।

#### 4. बड़ों के प्रति सम्मान का विकास:

बड़ों के प्रति सम्मान को पाठ्यक्रम और शिक्षण प्रक्रिया में शामिल किया जाना चाहिए। इसके लिए:

**बुजुर्गों की कहानियाँ और जीवन-शिक्षा:** छात्रों को बुजुर्गों के जीवन के अनुभवों से सीखने का अवसर दिया जाना चाहिए। इसके लिए नियमित रूप से छात्रों का संपर्क समाज के बुजुर्गों से कराया जाए, ताकि वे उनके अनुभवों से प्रेरणा ले सकें।

**संवाद और आदान-प्रदान:** विद्यालयों में बड़ों के साथ संवाद और आदान-प्रदान के कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं, जिनमें छात्र बड़े-बुजुर्गों से जीवन के महत्वपूर्ण सबक और नैतिक मूल्य सीख सकें।

#### 5. सकारात्मक और अनुशासित जीवनशैली का विकास:

जीवनशैली का भी शिक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ता है। आज की आधुनिक जीवनशैली में अनुशासन और स्वास्थ्य संबंधी आदतों की कमी देखी जाती है। इसके समाधान के लिए:

**स्वास्थ्य और स्वच्छता:** छात्रों को सही खान-पान की आदतें सिखाई जाएं, जिसमें संतुलित आहार, शुद्धता, और स्वच्छता पर जोर हो। आयुर्वेद और योग के सिद्धांतों को इसमें शामिल किया जा सकता है।

**खेलकूद और शारीरिक गतिविधि:** छात्रों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए खेलकूद और शारीरिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाए। इससे उनका जीवन अनुशासित और संतुलित रहेगा।

#### 6. प्रेरक व्यक्तित्वों की कहानियाँ:

भारत के महान संत, समाज सुधारक, और वीर व्यक्तियों की जीवनियाँ छात्रों को प्रेरणा दे सकती हैं। महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस, भगत सिंह, और अन्य महापुरुषों की जीवन-शिक्षाओं को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए।

#### 7. गुणवत्तापूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण:

शिक्षकों को नैतिक और सांस्कृतिक शिक्षा का महत्व समझाया जाए, और उन्हें इस दिशा में प्रशिक्षित किया जाए। इसके लिए:

**शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम:** शिक्षकों के लिए विशेष नैतिक और सांस्कृतिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं, ताकि वे छात्रों में नैतिकता, मानवता, और भारतीय संस्कृति के प्रति आदर का भाव उत्पन्न कर सकें।

**शिक्षकों का आदर्श रूप में होना:** शिक्षक खुद नैतिक मूल्यों के अनुकरणीय उदाहरण बनें, ताकि छात्र उनसे प्रेरणा ले सकें और उनके बताए मार्ग पर चल सकें।

भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्य और भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं होना चाहिए, बल्कि छात्रों को एक जिम्मेदार, नैतिक और सशक्त नागरिक बनाना भी होना चाहिए। जब शिक्षा में नैतिकता, मानवता, और संस्कृति का समावेश होगा, तो छात्रों में बड़ों के

प्रति सम्मान, शिक्षा के प्रति समर्पण, और सनातन धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था बनी रहेगी, और वे भारत की शिक्षा प्रणाली को गौरवमयी बनाएंगे।

- **भारतीय इतिहास में नैतिकता**

भारत के इतिहास में भी मानवता और नैतिकता के कई उदाहरण मिलते हैं। सम्राट अशोक, जो कलिंग युद्ध के बाद अहिंसा और धर्म के मार्ग पर चले, भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण नैतिक उदाहरण हैं। उनके शिलालेखों में मानवता, सहिष्णुता और परोपकार के सिद्धांतों का वर्णन किया गया है।

#### **ऐतिहासिक शिक्षा:**

अशोक का धम्म: सम्राट अशोक की शिक्षा में मानवता, सहिष्णुता और नैतिकता का प्रमुख स्थान था। कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने अहिंसा और धर्म के मार्ग पर चलने का संकल्प लिया और समाज में शांति और करुणा को बढ़ावा दिया। अशोक ने अपने शिलालेखों के माध्यम से नैतिकता और मानवता के संदेश का प्रचार किया।

#### **मध्यकालीन भारतीय इतिहास में नैतिकता और मानवता:**

मध्यकालीन भारत में भक्ति और सूफी आंदोलनों ने नैतिकता और मानवता को और अधिक सुदृढ़ किया। इस काल में धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता का विकास हुआ, और इन आंदोलनों ने धार्मिक सहिष्णुता, प्रेम, और समानता के आदर्शों को आगे बढ़ाया।

#### **प्रमुख नैतिक मूल्य:**

**सहिष्णुता (Tolerance):** सूफी और भक्ति आंदोलनों ने धार्मिक सहिष्णुता का प्रचार किया। कबीर, गुरु नानक, और अन्य संतों ने जाति, धर्म और वर्ग के भेदभाव को नकारते हुए मानवता को सबसे बड़ा धर्म बताया।

**करुणा (Compassion):** इस काल के संतों ने करुणा और प्रेम को ईश्वर से जुड़ने का सबसे महत्वपूर्ण साधन माना। उनकी शिक्षा में मानवता की सेवा और दया को सर्वोच्च नैतिक मूल्य बताया गया।

#### **ऐतिहासिक शिक्षा:**

**अकबर की धार्मिक नीति:** मुगल सम्राट अकबर ने धर्म के प्रति सहिष्णुता और न्याय की नीति अपनाई। उनकी "सुलह-ए-कुल" की नीति ने धार्मिक सहिष्णुता और सभी धर्मों के प्रति समानता का आदर्श प्रस्तुत किया। यह नीति मानवता और नैतिकता का उत्कृष्ट उदाहरण थी।

#### **आधुनिक भारतीय इतिहास में नैतिकता और मानवता:**

आधुनिक भारतीय इतिहास में महात्मा गांधी, राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद, और अन्य समाज सुधारकों ने नैतिकता और मानवता के सिद्धांतों को समाज में जागरूकता के रूप में प्रस्तुत किया। उनका उद्देश्य समाज में व्याप्त असमानता, अन्याय, और अंधविश्वास को समाप्त करना और नैतिक मूल्यों पर आधारित एक न्यायपूर्ण समाज की स्थापना करना था।

## प्रमुख नैतिक मूल्य:

स्वतंत्रता और न्याय (Freedom and Justice): भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का आधार नैतिकता और मानवता पर था। महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी। उनका संदेश था कि नैतिकता के बिना किसी भी स्वतंत्रता का कोई मूल्य नहीं है।

**समानता (Equality):** आधुनिक भारत के नेताओं ने जातिवाद, लिंगभेद, और धर्म के आधार पर भेदभाव का विरोध किया। उनके अनुसार समाज में सभी को समान अधिकार और सम्मान मिलना चाहिए, और यह नैतिकता का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

## ऐतिहासिक शिक्षा:

महात्मा गांधी का सत्य और अहिंसा का सिद्धांत: गांधीजी ने सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से नैतिक मूल्यों को समाज में स्थापित किया। उन्होंने कहा, "आप वह बदलाव बनिए, जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।" यह कथन नैतिकता और व्यक्तिगत जिम्मेदारी के महत्व को दर्शाता है।

- **डॉ. बी. आर. आंबेडकर का सामाजिक न्याय का संदेश:** आंबेडकर ने जाति व्यवस्था और सामाजिक असमानता के खिलाफ संघर्ष किया और भारतीय संविधान में समानता और न्याय के सिद्धांतों को स्थापित किया। उनके विचार नैतिकता और मानवता के प्रति उनके गहरे विश्वास को दर्शाते हैं। रवींद्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, प्रेमचंद और सरोजिनी नायडू ने अपने साहित्य और लेखन के माध्यम से नैतिक मूल्यों और मानवता को गहनता से दर्शाया है। उनके विचार, कथन और साहित्यिक रचनाएँ आज भी मानवता और नैतिकता के मार्गदर्शन का स्रोत हैं। आइए उनके योगदान और विचारों पर दृष्टि डालते हैं:

## 1. रवींद्रनाथ टैगोर

रवींद्रनाथ टैगोर का साहित्य मानवता, स्वतंत्रता, और नैतिकता के उच्च मूल्यों पर आधारित था। उन्होंने भारतीय समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना को जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

योगदान:

टैगोर ने अपनी काव्य और कहानियों में मानवता और प्रेम के संदेश को उकेरा। उनकी प्रसिद्ध रचना "गीतांजलि" में आत्मिक शांति, प्रेम और सत्य के विचार मिलते हैं।

उन्होंने शिक्षा को एक साधन माना जो न केवल ज्ञान देती है, बल्कि नैतिक मूल्यों को भी बढ़ावा देती है।

प्रसिद्ध कथन:

*"जो मनुष्य के लिए सत्य है, वही ईश्वर के लिए भी सत्य है।"*

यह कथन सत्य और मानवता के प्रति उनकी आस्था को प्रकट करता है।

*"स्वतंत्रता का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि मानसिक और आत्मिक स्वतंत्रता भी है।"*

यह कथन मानवता और आत्मिक स्वतंत्रता की उनकी विचारधारा को दर्शाता है।



## 2. महात्मा गांधी

महात्मा गांधी का जीवन और उनके लेखन नैतिकता, सत्य, अहिंसा और मानवता के सिद्धांतों पर आधारित थे। उन्होंने इन मूल्यों को अपने स्वतंत्रता संग्राम में भी अपनाया और लोगों को सिखाया।

योगदान: "सत्याग्रह" का सिद्धांत, जो सत्य और अहिंसा पर आधारित था, गांधीजी का सबसे महत्वपूर्ण नैतिक योगदान था। यह आंदोलन सत्य और नैतिकता के मार्ग पर चलने के लिए लोगों को प्रेरित करता है। उन्होंने "हिंद स्वराज" और "मेरे सत्य के प्रयोग" जैसी रचनाओं के माध्यम से नैतिकता और मानवता के उच्च आदर्शों को प्रस्तुत किया।

### प्रसिद्ध कथन:

*"आप वह बदलाव बनिए जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।"*

यह कथन नैतिक सुधार और व्यक्तिगत जिम्मेदारी को दर्शाता है।

*"जहाँ प्रेम है, वहाँ जीवन है।"*

यह कथन प्रेम और मानवता के महत्व को प्रकट करता है।

## 3. प्रेमचंद

प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज के दुखद पक्षों, असमानता और शोषण को उजागर किया और समाज में नैतिकता और समानता के आदर्शों को प्रस्तुत किया।

योगदान: प्रेमचंद की कहानियाँ और उपन्यास जैसे "गोदान" और "कफ़न" में गरीबी, शोषण और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई गई है। उन्होंने सामाजिक न्याय और मानवता के मुद्दों को गहराई से समझाया। उनके लेखन में मानवता, करुणा और सहानुभूति के मूल्य प्रमुख रूप से प्रकट होते हैं।

### प्रसिद्ध कथन:

*"विचारों की जंजीरें जकड़ने वाले कभी महान नहीं हो सकते।"*

यह कथन स्वतंत्रता और नैतिकता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

*"मनुष्य केवल दया के लिए नहीं बना है, वह सहानुभूति, करुणा और सम्मान के लिए भी बना है।"*

यह कथन मानवता और परोपकार के प्रति उनकी दृष्टि को प्रकट करता है।

## 4. सरोजिनी नायडू

सरोजिनी नायडू ने अपनी कविताओं और भाषणों के माध्यम से मानवता, समानता और स्वतंत्रता के आदर्शों का प्रचार किया। वह अपने वक्तव्यों में नैतिकता और स्त्री शक्ति का समर्थन करती थीं।

योगदान:

सरोजिनी नायडू को "नाइटिंगेल ऑफ इंडिया" कहा जाता है, और उनकी कविताएँ प्रेम, शांति और स्वतंत्रता के आदर्शों से भरी हुई हैं। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका और नैतिक शक्ति का समर्थन किया।



उनकी कविताओं में मानवीय करुणा और समाज के प्रति जिम्मेदारी का स्वरूप देखने को मिलता है।

**प्रसिद्ध कथन:**

*"जब तक आप नारी को उसकी पूर्ण स्वतंत्रता नहीं देते, तब तक आप समाज की आधी शक्ति को बाधित कर रहे हैं।"*

यह कथन समाज में स्त्रियों की स्थिति और नैतिक समानता के प्रति उनकी दृष्टि को दर्शाता है।

*"स्वतंत्रता और अधिकारों की लड़ाई में केवल शारीरिक शक्ति की नहीं, बल्कि नैतिक साहस की भी आवश्यकता होती है।"*

यह कथन नैतिकता और साहस के महत्व को प्रकट करता है।

## शिक्षा में मानवता के मूल्य की आवश्यकता पर शोध सार

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि एक संपूर्ण मानव का निर्माण करना है। मानवता के मूल्य व्यक्ति के नैतिक, सामाजिक व मानसिक विकास के मूल आधार हैं। वर्तमान समय में बढ़ती प्रतिस्पर्धा व भौतिकवाद के कारण शिक्षा से मानवीय मूल्यों का लोप हो रहा है।

### मानवता के मूल्य क्या हैं:

करुणा, सहानुभूति, सहयोग, सत्य, अहिंसा, समानता, और दूसरों के प्रति आदर। ये मूल्य समाज में समरसता बनाए रखने में सहायक होते हैं।

### शिक्षा में मानवता के मूल्य की आवश्यकता:

छात्रों में संवेदनशीलता और सामाजिक जिम्मेदारी का विकास होता है। वे केवल कुशल कर्मचारी नहीं, बल्कि अच्छे नागरिक और इंसान बनते हैं। मूल्य आधारित शिक्षा से हिंसा, असहिष्णुता, और नैतिक पतन को रोका जा सकता है।

### वर्तमान शिक्षा प्रणाली की स्थिति:

आज शिक्षा अधिकतर अंक, डिग्री और नौकरी केंद्रित हो गई है। नैतिक शिक्षा और मानवीय मूल्यों को पाठ्यक्रम में गौण स्थान प्राप्त है। शिक्षकों और माता-पिता पर भी दबाव केवल शैक्षणिक उपलब्धियों का होता है। मानवता के मूल्य कैसे विकसित किए जाएँ: विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाए। कहानियों, जीवन चरित्रों, और नाटकों के माध्यम से मानवीय मूल्य सिखाए जाएँ। गुरु और माता-पिता स्वयं उदाहरण बनकर बच्चों को मार्गदर्शन दें। समूह कार्य, सामाजिक सेवा, और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भागीदारी को बढ़ावा दिया जाए।

### शिक्षक की भूमिका:

शिक्षक केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि आदर्श प्रस्तुतकर्ता होते हैं। वे छात्रों के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षकों को संवेदनशील और नैतिक शिक्षा में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

### परिणाम और लाभ:

मानवता के मूल्य अपनाने वाले छात्र समाज के लिए उपयोगी बनते हैं।

स्कूलों में अनुशासन, सहिष्णुता और सहयोग की भावना बढ़ती है।  
देश को जागरूक, जिम्मेदार और नैतिक नागरिक मिलते हैं।  
शिक्षा तभी सार्थक होगी जब उसमें मानवता के मूल्य समाहित होंगे।  
आने वाली पीढ़ियों को नैतिक, सहनशील और संवेदनशील बनाना ही शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए।  
शिक्षा प्रणाली में मूल्यों को पुनर्स्थापित करना समय की मांग है।

## शिक्षा और मानवता शोध पत्र के संदर्भ ग्रंथ

1. रामायण के विविध कांड के मानवमूल्य संबंधित संदर्भ
2. महाभारत के पर्वों में मानव मूल्य
3. भगवद्गीता में मानव मूल्य
4. इतिहास तथा पुराणों में शिक्षा तथा मानवता के मूल्य
5. भारतीय साहित्य के विविध कालों में शिक्षा तथा मानवीय मूल्य
6. विविध कवि, कवइत्रियों साहित्यकारों के लेखन तथा कविताओं में मानवमूल्य
7. शिक्षा के क्षेत्र में मानवमूल्ययुक्त शिक्षा के आयाम लाने के विविध सोपान
8. नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा तथा मानवता की प्रमुखता।
9. मानव मूल्य प्राप्ति में शिक्षक, अभिभावक तथा समाज की भूमिका।